कैदी कविराय
की कुण्डलिया

कैदी कविराय की कुण्डलियाँ

अटलबिहारी वाजपेयी

सरस्वती विहार

२१ दयानन्द मार्ग दरियागंज
नई दिल्ली-११०००२

आत्मनिवेदन

कवि नहीं हूं
काव्य मरघट का,
पुराना भूत हूं मैं।

जग गया हूं
लग गया हूं,
अनागत अवधूत हूं मैं।

—अटलबिहारी वाजपेयी

कवि के बारे में

कुछ ही हफ्ते पहले अटलजी विदेशमंत्री बने थे। मैं मिलने गया था। बात उनके जीवन के दौरान पढ़ने लिखने की चल रही थी। बीच में अटलजी उठे और एक फाइल ले आए। उन्होंने फाइल की कोई पचास कुण्डलियां मुझे पढ़ने को दीं। पढ़ने के बाद मैंने कहा कि इनका संकलन छपना चाहिए। राजनीति की ये व्यंग्य कविताएं देखने में छोटी और सपाट-सी थीं परन्तु मार करें गम्भीर वाली उक्ति चरितार्थ करती थीं। पर अटलजी न केवल संकलन छपाने को आतुर नहीं थे छपाई के प्रति उदासीन भी थे। उनकी आदत में शुमार हो चुकी उदासीनता का ही यह परिणाम है कि उनके अनगिनत विचारपूर्ण भाषण आज हवा में विलीन हो चुके हैं। जो इक्का-दुक्का भाषण-संकलन छपे भी हैं वे उनका आंशिक प्रतिनिधित्व ही करते हैं। जेल जीवन की ये रचनाएं उनकी उदासीनता के कारण बिखरें नहीं यह मेरी इच्छा थी।

कविता संकलन छपने से वे चोटी के कवियों में प्रतिष्ठित हो जाएंगे न यह मेरी मान्यता थी, न उनकी कविताई की ही यह मंशा थी। १६ महीनों की काली रात के ऐतिहासिक कालखण्ड में अटलजी जैसे राजनेता की कुण्डलियों में व्यक्त हुई प्रतिक्रियाओं का जहां अपना एक राजनैतिक महत्त्व है वहां साहित्यिक महत्त्व भी है। एक अर्थ में ये जनसामान्य के साथ स्पन्दित एक संवेदनशील हृदय की वे धड़कनें हैं, जो देश के जागृत मानस के घुटन और आक्रोश पीड़ा और पराक्रम, वर्तमान के प्रति उनके राजनैतिक मन और भविष्य का प्रवाह, दुर्जेय तानाशाही का एहसास और अजेय जनशक्ति का आत्मविश्वास, समाज के सामूहिक तनाव का रेखाचित्र और आहत उत्तेजनाओं की विराट क्षमताओं का साक्षात्कार है। पर मैं सिर्फ उसके दस्तावेजी और राजनैतिक महत्त्व के तर्क से अपना आग्रह दुहराता रहा। उनका जवाब था कि इक्का दुक्का कविताएं पत्रिकाओं में छप ही रही हैं। प्रायः पत्रकार मित्र आकर कविताएं ले जाते हैं, ऐसा ही चलने दो।

"धर्म सरस्वती विहार' और 'हिन्द पॉकेट बुक्स' के सम्पादक मेरे मित्र सुदर्शन चोपड़ा अपनी सम्पादकीय घ्राण शक्ति से इन कविताओं के बारे में जान चुके थे। वे उन्हें छापना चाहते थे। मैंने उन दोनों को इस आशा से जोड़ दिया कि जब कदाचित प्रकाशकीय दबाव अटलजी की उदासीनता को तोड़े और अंततः एक दिन अनुबन्ध पत्र पर अटलजी के हस्ताक्षर हो गए।

कविता में अपना कभी कोई दखल नहीं रहा। अतः कुण्डलियों के साथ सम्पादकीय टिप्पणियाँ लिखने के बारे में सोच रहा था। राजनैतिक व्यंग्य कुण्डलियों पर साहित्यिक टिप्पणियाँ जड़ना मेरे बूते की बात नहीं थी। कोई काव्य मर्मज्ञ साहित्यकार इसके लिए ज्यादा उपयुक्त होता लेकिन अटलजी का एक बार कहना था कि मैं तुरंत तैयार हो गया। शायद कहीं यह विश्वास पैदा हो गया था कि इन पर पत्रकारीय टिप्पणियाँ भी चलेंगी।

क्या अटलजी कवि हैं? इस प्रश्न का उत्तर हाँ या न में देना सरल नहीं है। नवीं कक्षा में अटलजी ने पहली कविता लिखी थी। शीर्षक था यह ताजमहल यह ताजमहल। वह कविता ताजमहल के रागात्मक पक्ष पर केन्द्रित नहीं थी। ताजमहल के बारे में परम्परा से हटकर बिलकुल नये प्रश्न उस छोटी उम्र में उठाए थे। शायद उनके व्यक्तित्व की सम्भावनाओं का वह प्रथम विस्फोट था। वैसे उनके पिता श्रीकृष्णबिहारी वाजपेयी भी कवि थे। इस सन्दर्भ में यह भी ज्ञातव्य है कि हाल में हुए ग्वालियर क्षेत्र के प्राथमिक से लेकर उच्च विद्यालयों तक की प्रार्थनाओं के एक सर्वेक्षण में यह तथ्य सामने आया कि उनमें से अनेक प्रार्थनाओं के रचनाकार अटलजी के पिता श्रीकृष्णबिहारीजी ही थे। निष्कर्ष यह निकलता है कि काव्य के प्रति अनुराग अटलजी को पैतृक विरासत के रूप में मिला।

एक दिन डा० बरसाने लाल चतुर्वेदी मिल गए। उन्होंने उन दिनों को याद किया जब अटलजी कवि-सम्मेलनों के मंच के जादूगर थे। कवि सम्मेलनों में अटलजी का मंचीय साहचर्य नीरज, देवराज दिनेश, शिवमंगल सिंह सुमन आदि के साथ रहा। चतुर्वेदीजी ने भी बहुत से कवि सम्मेलनों में अटलजी के साथ कविता पाठ किया।

डा० चतुर्वेदी कह रहे थे कि अटलजी में दिनकर के ओज और राष्ट्रवाद के साथ साथ नीरज की तरलता और भावुकता भी थी। अगर वे काव्य की यात्रा ही करते तो निश्चय ही आज चोटी के नेता होने के बजाय चोटी के कवि होते।

लेकिन अटलजी का कवि पिछड़ता गया, राजनेता बढ़ता गया। उनकी काव्य क्षमता भाषणों में घुलती गई और उनके भाषण सरस्वती का

का यात्मक प्रसाद बनते गए। राजनतिक तकवाद न उनके कवि हृदय का कूल किनारा को तोडकर बहन स रोका। उनक हृदय की का य स्रोतस्विनी न उनक राजनेता को हृदयहीन राजनतिक जीव होने से बचाया। अगर आज अटलजी राजनतिक सौदेबाजी की भाषा म व्यवहार नही करते है तो यह मानवीय गुण उनके अन्दर क उस उनी दे कवि की करामात ही है जो उनम जीवन भर के लिए समाधिस्थ हो गया प्रतीत होता है।

अटलजी का पहले सम्बध बना आय कुमार सभा स और बाद म राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ से। उनकी विचारसरणी पर राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ और आय समाज का गहरा असर रहा है। वैसे स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयान द तिलक, महात्मा गाधी सावरकर, डा० हेडगवार एम० एन० राय जवाहरलाल नेहरू, श्री गुरुजी से लकर और डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी डा० लोहिया प० दीनदयाल उपाध्याय आदि परस्पर विरोधी दिखन वाले विचारको क व्यक्तित्व और कतित्व न अटलजी का अपने-अपने ढग से प्रभावित किया। कुल मिलाकर अटलजी क व्यक्तित्व म प्रखर किन्तु उदार राष्ट्रवाद का उदभुत योग उत्पन्न हुआ है। इसी योग ने अटलजी को सस्थागत आबद्धताओ के बावजूद सस्थावद्धता से ऊपर उठकर विचार और निणय करने की क्षमता दी है।

उनकी प्रारम्भिक कविताओ म भी प्रखर कि तु उदार राष्ट्रवाद की यही अवधारणा प्राय दृष्टिगोचर होती है। निम्न पक्तिया म भारतीय उदारता का जो स्वरूप प्रकट हुआ है उसे अटलजी ने दो दशक से ज्यादा पहले पक्तिबद्ध किया था

गोपाल राम के नामो पर, कब मैंने अत्याचार किया
कब दुनिया को हिन्दू करन, घर घर म नर सहार किया
कोइ बतला दे काबुल मे जाकर कितनी मस्जिद तोडी
भू भाग नही शत शत मानव के, हृदय जीतने का निश्चय।

अटलजी रूढ अर्थों म न व्यक्तिवादी ह न समाजवादी। इस यो भी कहा जा सकता है कि व्यापक अर्थां म व्यक्तिवादी और समाजवादी दोनो है। निम्न पक्तिया उन्होने अपन लिए कही है। तब कही, जब व शायद कॉलेज क छात्र भी नही थे। समाज और देश क लिए समपण की वही यह चेतना है जो उनक जीवन का निर्देशक तत्त्व बन गई है

मैं तो समाज की थाती हू
मैं तो समाज का हू गुलाम।
मैं तो समष्टि क लिए व्यष्टि का
कर सकता बलिदान अभय।

इसी कविता की निम्न पंक्तियां उन्होंने अपने देश की तरफ से कही हैं

मैं शंकर का वह क्रोधानल
कर सकता जगती क्षार क्षार
डमरू की वह प्रलय ध्वनि हूं
जिसमें नचता भीषण संहार,
रणचण्डी की अतृप्त प्यास
मैं दुर्गा का उन्मुक्त हास
मैं यम की प्रलयंकर पुकार
कर सकता जगती क्षार-क्षार,
यदि अन्तरतम की ज्वाला से
जगती में आग लगा दूं मैं
धधक उठे जल थल अम्बर
जड़ चेतन तो क्या विस्मय !

उनकी प्रारम्भिक भावुकता भरी कविता का एक अंश प्रस्तुत है

विश्व गगन पर अगणित गौरव के दीपक अब भी जलते हैं
कोटि कोटि नयनों में स्वर्णिम युग के शत सपने पलते हैं।
शत शत आघातों को सह कर जीवित हिन्दुस्तान हमारा
जग के मस्तक पर रोली सा शोभित हिन्दुस्तान हमारा।

और यह भी कि

उस स्वर्ण दिवस के लिए आज से कमर कसें बलिदान करें।
जो पाया उसमें खो न जाएं जो खोया उसका ध्यान करें।

अमर आग है—अमर आग है नामक कविता जिस ओज से अटलजी बोला करते थे आज भी लाखों लोगों को उसकी स्मृति रोमांचित कर जाती है। उस कविता की ये पंक्तियां इतिहास के एक प्रेरक प्रसंग की याद में कही गई हैं

यही आग सरयू के तट पर दशरथ जी के राजमहल में
घनसमूह में चल चपला सी प्रकट हुई प्रज्वलित हुई थी
दैत्य दानवों के अधम से पीड़ित पुण्यभूमि का जन जन
शंकित मन मन त्रसित विप्र, आकुल मुनिवरगण
बोल रही अधर्म की तूती दुस्तर हुआ धर्म का पालन।
तब स्वदेश रक्षार्थ देश का सोया क्षत्रियत्व जागा था
रामरूप में प्रकट हुई यह ज्वाला जिसने असुर जलाये देश बचाया
वाल्मीकि ने जिसको गाया।

वह चलन उन दिनों हालावाद का था। रहस्यवाद और छायावाद के कवि समादृत थे। प्रगतिवाद फैशन में था और प्रयोगवाद शैशव में लेकिन

अटलजी की अधिकांश कविताएं उद्‌बोधन शैली में रची गई हैं जो कि नव जागरण की ओर स्वतन्त्रता के नाम आमन्त्रण का यही स्वरूप अतिरिक्त बोधगम्य था। इनमें राष्ट्रवाद का पुट होता था

अस्थियों शहीदों की देती आमन्त्रण, बलिवेदी पर कर दो सर्वस्व समर्पण
कारागारों की दीवारों का न्योता, कैसी दुर्बलता, अब कैसा समझौता ?
हाथों में लेकर प्राण चला मतवाला, सीने में लेकर आग चला प्रणवाला !

इस विभाजन के समय अटलजी की प्रतिक्रिया का यह पंक्तियां उन वेदना विदग्ध मानस की तस्वीर है

मां के पुत्रों के शोणित से, रंजित है वसुधा की छाती।
टुकड़े-टुकड़े हुई विभाजित, बलिदानी पुरखों की थाती।
कण-कण पर शोणित बिखरा है, पग पग पर माथे की रोली।
इधर मनी सुख की दीवाली, और उधर जनधन की होली।

संकट की एक घड़ी की चुनौती स्वीकार करते हुए अटलजी ने कुछ कविताएं लिखी थी। यहां दो के अंश उद्धृत हैं

उजियारे में अंधकार में, कल कछार में बीच धार में,
घोर घृणा में पूत प्यार में, क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत शत आकर्षक अरमानों को दलना होगा !
कदम मिलाकर चलना होगा ! !

आंसू नहीं, स्वेद शोणित की आज मांग है
कर्म क्षेत्र में मर मिटने का अमिट राग है
कंटक पथ पर पांव बढ़ाते गात जाना
हर बाजी पर हम यहां सर्वस्व लगाना
जन्म मरण का खेल अनूठा इसमें हार नहीं है
वह क्या चल पाएगा जिसको पथ से प्यार नहीं है ?

'स्वतन्त्रता दिवस की पुकार' नामक कविता में सामाजिक एकता का एक पहलू उजागर है इन पंक्तियों में

जिनकी लाशों पर पग धर कर आजादी भारत में आयी।
वे अब तक खानाबदोश गम की काली बदली छायी।
बस, इसीलिए तो कहता हूं आजादी अभी अधूरी है।
कैसे उल्लास मनाऊं मैं ? थोड़े दिन की मजबूरी है।

विभाजन पर ही दूसरी कविता की उन कुछ पंक्तियों का तेवर कुछ जुदा है

किस बेटे ने मां के टुकड़े कर के दीप जलाए ?
किसने भाई की समाधि पर ऊंचे महल बनाए ?

चिता भस्म पर किसने गुम्बद स्वर्णिम साज सजाए ?
किसने लाखों के विनाश पर जय के वाद्य बजाए ?
किसने आग लगा कर अपने घर किया उजाला ?
किसने निज का सुख उन्माद मा का विक्रय कर डाला ?
शस्य श्यामला स्वणभूमि क्यों हुई आज कंगाल ?
किसके कारण देव भूमि म आज अभाव अकाल ?

हाल के आपातकाल के दौरान उन्होंने यह कविता लिखी थी। जब यह कविता कद की दीवारों को चकमा देकर बाहर आई तो इस सम्पादक ने उसे भूमिगत पत्र जनवाणी म प्रकाशित किया था। संघर्षरत लोगों के लिए टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते' कितना प्रेरक था आज उसका अनुमान लगाना भी सहज नहीं है

सत्य का संघर्ष सत्ता से न्याय लडता निरकुशता से
अंधेरे ने दी चुनौती है किरण अंतिम अस्त होती है।
दीप निष्ठा का लिए निष्कंप वज्र टूटे या कि हो भूकंप
यह बराबर का नहीं है युद्ध हम निहत्थे शत्रु है सन्नद्ध
हर तरह के शस्त्र से है सज्ज और पशुबल हो उठा निर्लज्ज।
किन्तु फिर भी जूझने का प्रण पुन अंगद ने बढाए चरण।
दांव पर सब कुछ लगा है रुक नहीं सकते
टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।

२६ जनवरी १९७६ को राज पथ पर परेड चल रही थी और उधर अटलजी नजरबंदी के दौर म अस्पताल म बीमारी के दिन काट रहे थे। उस म उनकी एक कविता का जन्म हुआ। उसम से चार पंक्तियां प्रस्तुत हैं

राजपथ पर भीड जनपथ पडा सूना
पलटनों का मार्च होता शोर दूना
शोर म डूबा हुआ स्वाधीनता का स्वर
रुद्ध वाणी लेखनी जड कसमसाता उर।

स्पष्ट है कि अटलजी ने कभी भी कविता कविता के लिए नहीं लिखी। उनकी कविता अपने समाज के लिए थी पूरी मानवता के लिए थी। थी इसलिए कि आज उनकी अधिसंख्य कविताएं समय की दरारों म खो गई हैं। कहीं संकलित नहीं है। इक्की दुक्की उन्हें याद होगी। कुछ मित्रों की डायरियों म मिल जाएंगी पर ज्यादातर कविताएं अनुपलब्ध हैं। छपाई के प्रति उनकी उदासीनता के भाव ने उन्हें और समाज को कुछ महत्त्वपूर्ण रचनाओं से वंचित कर दिया।

असल म यह अटलजी के जीवन के एक अन्तर्द्वन्द्व और उसके बीच सम्पन्न हुई उनकी विकास-यात्रा का स्वाभाविक परिणाम है। उनके इस

अन्तर्द्वन्द्व को उनकी एक रचना के निम्न अंश म देखा जा सकता है, जो नवनीत के दिसम्बर १९६३ के अंक म राजनीति की रपट ली राह म' शीषक स प्रकाशित हुई थी

' मेरी सबसे बडी भूल है राजनीति म आना। इच्छा थी कि कुछ पठन-पाठन करूंगा। अध्ययन और अध्यवसाय की पारिवारिक परम्परा को आग बढाऊंगा। अतीत से कुछ लूगा और भविष्य को कुछ द जाऊंगा, किन्तु राजनीति की रपटीली राह म कमाना तो दूर रहा गाठ की पूजी भी गवा बठा। मन की शान्ति मर गई। सन्तोष समाप्त हो गया। एक विचित्र सा खोखलापन जीवन म भर गया। ममता और करुणा क मानवीय मूल्य मुह चुरान लग ह। क्षणिक स्थायी बनता जा रहा ह। स्थायित्व को जडता मानकर चलन की प्रवृत्ति पनप रही ह।

आज की राजनीति विवक नहीं, वाक्चातुय चाहता है, सयम नहा, असहिष्णुता को प्रोत्साहन देती है, श्रेय नहीं, प्रय क पीछे पागल है। मतभेद का समादर करना तो दूर रहा, उस सहन करन की प्रवत्ति भी विलुप्त होती जा रही है। आदशवाद का स्थान अवसरवाद ले रहा है। बायें और दायें का भेद भी व्यक्तिगत ज्यादा है विचारगत कम। सब अपनी अपनी गोटी लाल करन म लगे ह। उत्तराधिकार की शतरज पर मोहर बठान की चिन्ता म लीन है। सत्ता का सघष प्रतिपक्षियो स ही नहीं, स्वय अपने दल वाला स हो रहा है। पद और प्रतिष्ठा को कायम रखन क लिए जोड तोड, साठ गाठ और ठकुरसुहाती आवश्यक है। निर्भीकता और स्पष्टवादिता खतरे स खाली नहा है। आत्मा को कुचलकर ही आग बढा जा सकता है।

' इसम स देह नहीं कि जिस राजनतिक दल स मैं सम्बद्ध हू वह अभी तक अनक बुराइया से अछूता है किन्तु उसम भी ऐसे व्यक्तियों की सख्या बढ रही है जो हलकी आलोचना मे रस लेत हैं और प्रतिपक्षी की प्रामाणिकता पर खुल रूप म सन्देह प्रकट करना अपना अधिकार मानत है।

इतना सब होत हुए भी राजनीति छूटती नहीं। एक चस्का सा लग गया है। प्रतिदिन प्रात समाचारपत्रो मे अपना नाम पढकर जो नशा चढता है वह उतरने का नाम नहीं लता। सम्भवत इसीलिए राष्ट्रीय स्वयसवक सघ के सस्थापक न स्वयसवको को अखबार म नाम छपान और स्वागत सत्कारो म फसन क विरुद्ध चतावनी दी थी किन्तु राजनीति प्रधान युग म जब सस्कृति और समाज का विकास भी शासन की कृपाकोर पर निभर हो गया है आत्म विज्ञापन

स कस वचा जा सकता है ? स्पष्ट है साप छछू दर जसी गति हो गई है —न निगलते वनता है न उगलत।

आज की वदली हुई स्थितियां म भी उनके उक्त विचार कितन सुसगत ह । और जहा तक मरी जानकारी है आज भी उनका यह द्वद्व वरकरार है।

यह सही ह कि अटलजी न उगलन का कइ बार कोशिश की ह। राजनीति म उदासीन होकर पल्ला झाडने लग तो स्व० दीनदयालजी न उह मना लिया। दीनदयालजी म कुछ चमत्कार ही एसा था। ससदीय राजनीति के जजर होन का एहसास हुआ तो लोकसभा की सदस्यता स त्यागपत्र दन का फसला घोषित कर दिया। अच्छ खास विवाद और दलीय घरवन्दी क बाद उह त्यागपत्र न दन को मनाया जा सका। कइ बार उहोन चुनाव न लडन की इच्छा प्रकट की पर दलीय अनुशासन के समक्ष अपनी व्यक्तिगत इच्छा को उहोन दवा लिया। राजनीति क मौजूदा माहौल म जहा पारस्परिक अविश्वास की भरपूर फसल उगती ह, वहा शुद्ध राजनीतिक व्यक्ति इनम भी राजनतिक चाल ही दख तो देख सकत ह, पर जिसकी अटलजी क अदर क मनुष्य स थाडी भी पहचान ह वह उनक असमजस को कूट चाल नही मान सकता। यह अतद्वद्व जहा उह राजनीति म बनाए रखता है वही उह व्यापक मानवीय चेतना स जाड रखता है और साथ ही राजनीति स परावत करता रहता ह। सिफ सौदेवाजी क तराजू पर लखा जोखा करन वाल दलीय हानि लाभ की गणना करन पर कुछ लाग उनस खुश या नाखुश हो सकत ह लकिन आम आदमी अटलजी की आखो म अपनी धडकनो की समतयता पाता ह।

असल म राजनता अटलजी क व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूण हिस्सा कवि है। व अपन हृदय की रचना क कारण कवि है और मौजूदा पष्ठभूमि म एक कविहृदय व्यक्ति का उच्चस्तरीय भारतीय राजनीति म महत्त्वपूण होना प्रसन्नता की वात है। एकात्म मानववादी आदशवाद के प्रति समर्पित अटलजी का विदशमत्री के नात विश्व राजनीति क मच पर उपस्थित होना सम्पूण मानवता का वसुधव कुटुम्बकम' की आकाक्षा क लिए मगल सकत है।

इस व्यापक परिप्रक्ष्य म यह कहा जा [illegible] राजनीति न एक कवि को पथ भ्रष्ट कर दिया लकिन वा [illegible] । को सत्य निर गु र [illegible] स भ्रष्ट होन स वचाए [illegible] [illegible]

[illegible]

की छाती मी

अब जो कुछ कहा जा रहा है, शायद वह गणितीय दृष्टि से सही न हो, पर सच्चाई कुछ-कुछ ऐसी ही है। वे आधे राजनेता हैं आधे कवि हैं और आधे सामान्य व्यक्ति। कायदे से तीन आधों का योग इकाई से ज्यादा होना चाहिए था परन्तु अटलजी के मामले में यह गुणा मिलाकर भी आधा ही बनता है। और यह अधूरापन उनकी जिन्दगी की एक बड़ी सच्चाई है एक बड़ी पूंजी भी है। यह अलग बात है कि उनके अधूरेपन के सामने औरों के पूरे भी बौने पड़ते हैं, लेकिन आधेपन का गहरा एहसास उनकी पूर्णता की कचोटों को भी बनाए रखता है। वे अपने अधूरेपन के शानदार उद्घाटन का कोई अवसर शायद ही कभी हाथ से जाने देते हों। वह सिर्फ विनम्रता ही नहीं होता है एहसास की ईमानदारी भी होता है। उनका यह अधूरापन देश के जनसामान्य के अधूरेपन की व्यक्तिगत पहचान और आत्मगत समानुभूति है। इसे ही वे अपने भाषणों में कवि-हृदय की पीड़ा लेकर जाहिर करते हैं। परिणाम यह होता है कि उनका राजनेता भी अधूरा रह जाता है। राजनीतिक शतरंज बिछाकर मनुष्य निरपेक्ष होकर चाल चलने के चलन वाले राजनीतिक युग में राजनेता अटलजी का आधा होना ही श्रेयस्कर है।

भाषणों, लेखों और कविता में अटलजी कभी क्लिष्ट हिन्दी नहीं लिखते। उनके लिए क्लिष्टता से बचना एक तरह से विद्वत्ता बघारने से बचने के अलावा पूरी निष्ठा से जनसाधारण से भाषायी सामीप्य की आराधना करना है।

मुझे अनेक प्रसंग याद हैं, जब मेरे लिखे किसी दस्तावेज से उन्होंने क्लिष्ट शब्द काटकर एवज में सरल शब्द डाले। ऐसे में अगर कोई असमर्थ शब्द भी चला आए तो भी जनसामान्य की सामीप्य आराधना के लिए वह अटलजी के लिए वरेण्य होता है। यह अलग बात है कि उनके द्वारा प्रयुक्त घिसे पिटे शब्दों के साथ उनके अर्थ सफल विद्रोह करते हैं और शब्दों की अर्थ सीमा के परे भी फैल जाते हैं, खास कर भाषणों में। संयुक्त राष्ट्र संघ में हुआ उनका पहला हिन्दी भाषण इस बात का प्रमाण है कि उनकी सरल भाषा में गम्भीर और जटिल अर्थों को पूरी क्षमता और सार्थकता के साथ वहन करने की पात्रता होती है। अटलजी की लक्षणा और व्यंजना भी अभिधामुखी होती है।

यही बात इस संकलन की कुण्डलियों की भाषा के साथ लागू होती है। जहां तक इन कुण्डलियों का सवाल है ये कवि के नाम उसकी अन्तरात्मा का पुरस्कार शिकायती दस्तावेज हैं। इनमें व्यंग्य है पर कटुता नहीं, इनका कुण्डली का तेवर पुराना है पर इनकी तासीर आधुनातन है। इनका आकार सूक्ष्म है पर समय के विराट प्रश्नों पर इनकी पकड़ पूरी और

मजबूत है। कुण्डलिया की विशेषता यह होती है कि ये अपने आकार में छोटी होती हैं पर इतनी छोटा भी नहीं होती कि सिर्फ कुआ हो। ये नदी न सही पर तालाब जरूर होती हैं जिसमें तैरा जा सकता है। यह संकलन न नियोजित काव्य है और न कविता संग्रह। यह तो आपातकालीन कैदी जीवन में जबरन मुहैया कराए गए खाली समय में व्यस्त राजनेता के अन्दर के निर्दयाय कवि के जागरण के बाद की ऐसी पहली अचना है जो अनियोजित और बेतरतीब है जो बेतरह फुटकर और इधर उधर तक फैली हुई है। लेकिन राजनीति की अथलय और संघर्ष का सरगम इसमें यथेष्ठ है। इन कुण्डलियों में लोकनायक जयप्रकाश नारायण आचार्य विनोबा भावे आदि से लेकर संजय गांधी के मकेनिक अर्जुनदास तक अनेक राजनैतिक व्यक्तियों का उल्लेख आया है। कई कुण्डलियाँ तो व्यक्तियों के आस पास ही बुनी गई हैं। राजनैतिक उदारता के जिस छोर पर अटलजी पहुंचे हैं उसीका यह परिणाम है कि बिना अपने राजनैतिक व्यक्तित्व का बीच में सन्तुलित किए उन्होंने राजनैतिक नामों का धड़ल्ले से उपयोग किया है। जब इस सम्पादक ने एक दो नामों पर आपत्ति की तो जो जवाब आया वह उसी उदारता का परिचायक था। इस संकलन की कुछ कुण्डलियां आपातकाल समाप्त होने और विदेशमंत्री बनने के बाद लिखी गई हैं। शेष सबकी रचना आपातकाल में बन्दी-जीवन के दौरान हुई।

बन्दी जीवन के दौरान उन्होंने इन हल्की फुल्की राजनैतिक व्यंग्य कुण्डलियों के अलावा गम्भीर कविताएं भी लिखीं। इस संकलन में वे कविताएं उन्हीं के आग्रह के कारण समाहित नहीं की जा सकीं। उनकी डायरियों में यत्र-तत्र कुछ पढ़ने के बाद दर्ज की गई टिप्पणियां या किसी रचना व घटना पर उनकी निजी प्रतिक्रियाएं भी दर्ज थीं लेकिन वे सब उनकी व्यक्तिगत धरोहर हैं।

—सम्पादक

क्रम

●

दुःशासन पर्व

k

२६ जून १९७५ को प्रातः समन्वय समिति की किसी बैठक के लिए अटलजी, आडवाणीजी, दण्डवतेजी और श्यामनन्दन बाबू बंगलौर में थे। ये सब वहां बंदी बनाए गए थे। इन्हें दिन भर थाने में रखा गया। इनमें श्याम बाबू ही अकेले थे जो पहले मंत्री रह चुके थे। अतः राजनीतिक कैदी के नाते अपने अधिकारों के लिए वे गहरे उतरे। इन नेताओं के साथ की गई बदसलूकी आम अधिकारियों की मानसिकता का संकेत देता है।

* कविराय की कुण्डलियां

धरे गए बगलोर मे

धरे गए बगलोर मे,
अडवानी के सग,
दिन भर थाने मे रह,
हो गई हुलिया तग,
हो गई हुलिया तग,
श्याम बाबू मनाए
'भ्रात पकडे गए,
न अब तक जेल पठाए' ?
कह कैदी कविराय,
पुराने मत्री ठहरे,
हम तट पर ही रहे,
मिश्रजी उतरे गहरे !

आपात के औचित्य प्रतिपादन के लिए की गई श्रीमती गांधी की समूची तार्किक किलेबन्दी को क्षण भर के लिए कवि ने कबूल कर लिया, लेकिन मर गए क्यों रामधन और नाखर हैं क्यों बन्दे के प्रश्नों में तार्किक किले को बुर्जों में ही नहीं बुनियादों में ही उन्होंने डाइनामाइट लगा दिया। कम से कम इतना तो श्रीमती इन्दिरा गांधी फासिस्ट नहीं कह सकती थीं। वे तो उनसे भी अधिक समाजवादी थे। श्रीमती गांधी की सिद्धान्त भ्रष्ट सत्तालिप्सा को चुनौती देने वाले इन व्यक्ति प्रतीकों की गिरफ्तारी ने आपातकाल की तार्किक आधारभूमि को उघाड़ा और दृश्य सामने वह आया जहां श्रीमती गांधी सब कुछ छोड़कर कुर्सी से कसके चिपटी पड़ी थीं।

शेखर हैं क्यों बन्द?

अरे गए क्या रामधन,
        शेखर हैं क्यों बन्द?
मुझको समझा कर कहा,
        मैं ठहरा मतिमन्द,
मैं ठहरा मतिमन्द,
        वनान्त क्यों कृष्णकान्त हैं?
उग्र सिंह होकर,
        प्रोफेसर क्या प्रशान्त हैं?
यह बैंदी कविराय,
        धारिया क्या न धार पर?
लक्ष्मीकान्तम्मा क्या बैठी
        मन को मार कर?

आपातकाल को आचार्य विनोबा भावे ने अनुशासन पर्व का नाम देकर गौरवान्वित किया था। कवि अनुशासन पर्व में दुःशासन लीला देखकर हैरत में है। यह कैसा अनुशासन पर्व है? धर्मराज्य के बदले डण्डे का राज! अनुशासन पर्व के लक्षण को देखकर कवि आश्चर्यचकित है। विशेष रूप से तब जब शासक की निजी आवश्यकता के लिए नित कानून बदलने लगे। संविधान के संशोधन तक इसके गवाह हैं।

अनुशासन पर्व

अनुशासन का पर्व है,
बाबा का उपदेश,
हवालात की हवा भी
देती यह संदेश,
देती यह संदेश,
राज डंडे से चलता,
जज हज करने जाए,
राज कानून बदलता
कह बंदी कविराय,
शोर है अनुशासन का
लेकिन जोर दिखाई
देता दुःशासन का।

सत्ता का साधन से साध्य बनना लोकतंत्र की आत्मा के लिए मारक होता है। आपातस्थिति के अंत पहले से सत्ता का यह चरित्र परिवर्तन चल रहा था। सिद्धान्त आस्था के नहीं इस चरित्र परिवर्तन का ध्यान देने के उपकरण बन रहे थे। कवि ने उस लम्बी प्रक्रिया को उजागर करने के लिए एक सूत्र पकड़ा है। अगर सिद्धान्तों की लड़ाई थी और खतरा तथाकथित दक्षिण पंथी और प्रतिक्रियावादी तत्वों की ओर से आ रहा था तो चन्द्रशेखर और रामधन की गिरफ्तारी का कौन-सा तुक था? और अगर रामधन और चन्द्रशेखर की गिरफ्तारी हुई है (जो कि हुई है) तो लड़ाई सिद्धान्तों की कैसे हो सकती है? कुर्सी धर्म की सर्वनाशी सर्वोच्चता की ओर कवि का संकेत है।

स्वाहा की तैयारी ?

धरे गए क्या रामधन,
शेखर हैं क्यों मंद ?
मो को समझाकर कहो,
हौं ठहरी मतिमंद,
हौ ठहरी मतिमंद,
बात है बड़ी अजबा,
खरबूजे को खाय रहा
है क्या खरबूजा ?
कह कैदी कविराय,
लाभ सत्ता का भारी,
सत्ता के हित सब कुछ
स्वाहा की तयारी ?

याग्रस प मकडा ग्गिजो म लावतम के कितन पहुंग्ए है और कितन गुनुरमुग मिता हैं यनाय की ग्शा म तग्न वान ग्श उग्न पग्चानना घाहता था। ग्री रामधन और श्री चन्द्रगाघर का पत्रिन म जो आध ग्जन वागी लाग थ यहा अटलजी ा उनकी इबारत ग्तिहास म ग्ज की है। वज और बलिया की मिट्टी का स्तवन ग्आ है इगम।

हुआ जब बलिया बागी

धन्य धन्य है रामधन,
कृष्णभूमि आबाद,
साथ चन्द्रशेखर सुभग,
बयालीस की याद,
बयालीस की याद,
हुआ जब बलिया बागी,
गोरों को गारत करने
जब जनता जागी,
वह बंदी कविराय,
क्रान्ति पूरी होना है,
रक्त-स्वेद से नई कालिमा
को धोना है।

आपातकाल की घोषणा का औचित्य प्रतिपादन काल्पनिक फासिस्ट षडयन्त्र का प्रचार करके किया गया था।

बहुत-से दिखावटी कदम उठाए गए। आंकडा के कारखाने पूरे पमाने पर काम करने लगे। लोकहित का बनावटी मुखौटा लगाया गया। यह ठीक है कुछ खास नहीं हुआ पर जो कुछ हुआ उसका भी श्रेय असल में तत्कालीन विरोधी पक्ष को ही था। कभी कवि कहते हैं—चलो इसी बहाने सही जनता की समस्याओं से आमना सामना तो हुआ!

फासिस्टों को शुक्रिया

'फासिस्टों' का शुक्रिया,
झकझोरी सरकार
कुम्भकरण निद्रा तजी,
ताल ठोक तैयार,
ताल ठोक तैयार
प्यार दलितों का उमड़ा,
दसों दिशा में पुन,
कागजी घोड़ा दौड़ा,
कह कैदी कविराय
विरोधी लेंय बधाई,
चीनी, चाय, चाटुकारी,
मस्ती करवाई।

आपातकाल क पहल ही नहरू राजवश की स्थापना की आकाक्षा और लोकतत्री आस्थाओ क प्रति अवहेलना का भाव लक्षित होन लगा था। आपातकाल क लागू होत ही अटलजी न पारिवारिक तानाशाही की दुखद सम्भावनाओ को स्पष्ट रूप म मुखर किया है इस कविता म।

चण्डीगढ और गोहाटी म काग्रेस क अधिवेशन क समय पुत्र सजय की ताजपोशी की परियोजना का जसा खुला प्रियावयन चालू हुआ उसम काग्रेसी नता और सारा दश सकत म आ गया। श्रीमती इन्दिरा गाधी न राज्य दश और सरकार का अपन और सजय क साथ मिलाकर एकाकार कर लिया। इन्दिरा ही भारत है सजय ही इन्दिरा है और उनकी इच्छा ही कानून है-- ऐस समीकरण स सारी राजनीति भ्रष्ट हो गई। यह रचना अटलजी क दिल्ली लौटन क बाद हुई। तब जब ताना पड गया था ताज की तयारी हो रही थी।

पुत्र पर ताज फलेगा

दिल्ली मे बगलार गए थे,
बगलोर से दिल्ली
इंदराजी ने कस कर गाडी,
ढिली थी जा किल्ली ,
ढिली थी जा किल्ली,
राज दरपुश्त चलेगा
बटी रानी बनी,
पुत्र पर ताज फलेगा
वह कदी कविराय,
अजब ह तुफी छाई
गद्द पर ताज पडे
नजर उठनी न उठाई।

४ जलाइ १९७५ को तानाशाही ने राष्ट्रीय स्वयसवक सघ पर प्रतिब ध लगा दिया। सघ सस्थापक डा० केशवराव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित सघ को कलकित करने और भारत भक्ति के सस्कार जाग्रत करने पर प्रतिब ध लगाने और डी० ए० वी० पी० फिल्म डिवीज़न समाचार आदि के प्रचार की आधी मे सघ को नष्ट करने के जुनून' के प्रति वर्ग विरकुल अनाघ्रात भाव से देख रहा है। उस जमायत की अधरात्रि मे भी विश्वास है कि प्रतिदिन सघ शाखा मे गूजने वाला भारत माता की जय का घोष दिग दिगत मे गुजायमान होगा।

मातृपूजा प्रतिबन्धित

अनुशासन के नाम पर,
अनुशासन का खून,
भग कर दिया संघ को,
कैसा चढा जुनून,
कैसा चढा जुनून,
मातृपूजा प्रतिबन्धित,
कुलटा करती केशव-
कुल की कीर्ति कलंकित,
कह कैदी कविराय,
तोड कानूनी कारा,
गूंजेगा भारत माता,
की जय का नारा।

१९७१ म आपातस्रात लगान क काइ दा महान क ज ्र पटना म प्रत्यक्ष राज आइ। जं० पा० बिहार के मूस और बा म अकसर आम जनता का ाल त्रम जान । आम जनता की भाषा म इस कडी कविराय न ज० पा० या ान म ाासन क पाप का फल बताया है। गगा क मानी ाार का आम जनता म याप्त आक्राश का आलम्बन लिया है कवि न प्राकृतिक काप और उसका गगाजल म।

इन पक्तिया क लखक का याद है बाढ़ग्रस्त लागा का मदद क लिए कवि न कल्याण स अपना विनम्र आर्थिक यागदान सरकारी माध्यम क जरिय भजा था।

धधकता गगाजल है

जे० पी० डारे जेल मे,
ता को यह परिणाम,
पटना मे परलै भई
डूबे धरती धाम,
डूबे धरती धाम,
मच्यो कोहराम चतुर्दिक,
शासन के पापन को
परजा ढाव, धिक धिक
वह बंदी बलिराय,
प्रकृति का कोप प्रबल है,
जयप्रकाश के लिए
धधकता गगाजल है।

बीस सूत्र रटते रहो

काव्य के बीस सूत्र है

कवि मिलना मुश्किल हुआ,
भाडा की है भीड
ठकुरसुहाती कह रहे,
बिन हड्डी की रीढ,
बिन हड्डी की रीढ,
सत्य से नाता तोडा,
सत्ता की सुन्दरी,
नचाती लेकर कोडा,
कह कंदी कविराय,
काव्य के सूत्र बीस है,
स्तुति गायन प्रथम,
शेष मे बडी खीस है।

करो पूत परसन्न

बीस सूत्र रटते रहो,
बेडा होगा पार,
अंधा बांटे रेवडी
लेना हाथ पसार,
लेना हाथ पसार,
न देना फूटी कौडी,
खूब लगाओ पेड,
कराओ सडक चौडी,
कह चंदी कविराय,
मिलेगी मनसबदारी,
करो पूत परसन्न,
मनाओ या महतारी ।

एक नया इलहाम

बीस सूत्र का कार्यक्रम
एक नया इलहाम
बीस आठ तीस बरस
भरे हुए गोदाम,
भरे हुए गोदाम,
दाम से जेब खाली
खाना कभी किसान,
कभी बाबू घरबारी,
वह कैदी कविराय,
कर्ज सब माफ हो गए
मुर्गी वाले कर्जदार
भी माफ हो गए।

बास सूत्र क सब यापक प्रचार स कवि का कामसूत्र या आ गया। शा क मी सयोग था कवि न काम ज्यादा बातें कम क नारे स जोडा। ३० साल से बात ज्यादा काम कम पर यवहार करने वालो को काम ज्यादा बात कम रखते रखना कवि के लिए काफी दिलचस्प अनुभव साबित हुआ।

पच बाण की मार से

कामसूत्र के देश मे,
　　　　बीस सूत्र का काम,
पच बाण की मार से
　　　　मचा हुआ कोहराम,
मचा हुआ कोहराम,
　　　　काम ज्यादा, बात कम,
कामधेनु की सेवा,
　　　　मेवा देगी हर दम,
कह कैदी कविराय,
　　　　काम की कला निखरती,
बूढ़ जग को चढी
　　　　जवानी सदा अखरती ।

जना   ७५ क पहन सप्ताह म श्रामती गाधा न बीस सूत्री कायक्रम की घापणा की। कवि न न पक्तिया म अपनी प्रतिक्रिया दज की है। य कायक्रम नय नहा कवल उनका कलवर नया है। मत्र पुराना और छाटा है। तत्र नया और बडा है। तत्र यानी प्रचार-तत्र। दिखावट क मुलम्म का गहरा प्रभाव है चौराह पर खडा बाबू। बाहर जो फरब का आवरण हाता है — जा सिफ मुखौटा हाता है।

मन से तन बड़ा है

बीस सूत्र को मत न मानो,
इंदिरा जी ने बोला
नया नहीं मन कुछ इसमें,
बहुत पुराना चोला,
बहुत पुराना चोला लेकिन
रंग, रूप है चोखा,
साठ कोटि जनता का देता,
इस सिक्सटर्म में धोखा,
यह कैदी कविराय,
मन से तन बड़ा है,
चौराहों पर इसीलिए
तो खाड़ पड़ा है।

लका मे भगदड

बीस सूत्र का कायक्रम,
ज्यो मारुति की पूछ,
जिसके मारे हो गई,
नीची सबकी मूछ,
नीची सबकी मूछ,
मची लका म भगदड,
सोने के सिहासन पर,
लटका चमगादड,
कह कैदी कविराय,
अपेक्षाओ की ज्वाला,
स्वाहा कर देगी,
अत्याचारो की माला।

न बच्चे दे जनानिया

पाच साल की योजना,
तीन सात गये बीत,
फिर भी गाये जा रहे,
जन्म दिवस के गीत,
जन्म दिवस के गीत,
इंदिरा सोहर गाव,
हवसर नजर उतारे,
'व्हीसी' ढोल बजाव,
कह बैदी कविराय,
मिलें दो मेहरबानिया,
पानी दें भगवान,
न बच्चे द जनानिया।

कुछ वर्षों से यह प्रच्छन्न प्रयास चल रहा था कि यह देश लोकतंत्र के लिए और लोकतंत्र इस देश के लिए उपयुक्त नहीं है। पश्चिम का एक बौद्धिक वर्ग भी एशिया को लोकतंत्र के लिए उपयुक्त नहीं मानता रहा। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इसी पृष्ठभूमि में सीमित तानाशाही का सिद्धान्त आपात काल के पहले से प्रचारित करवाना चालू कर दिया था। हार्ड स्टेट बनाम सॉफ्ट स्टेट की विचारसरणी का गलत विश्लेषण इस सन्दर्भ में किया जाने लगा था। आपातकाल का लागू करना उसी की अगली कड़ी थी पर स्पष्ट मन्तव्य था पारिवारिक तानाशाही। कवि ने इसी गहरी तर्क पृष्ठभूमि में यह सवाल खड़ा किया है कि अगर आपातकाल की राजनैतिक प्रणाली पद्धति इतनी ही चमत्कारपूर्ण थी तो फिर आजादी मिलते ही लोकतंत्र के बजाय इस सीमित तानाशाही का रास्ता क्यों नहीं चुना गया? दरअसल सोच समझकर इसे नहीं चुना गया क्योंकि अपनी तमाम कमियों के बावजूद लोकतंत्र, राजनीतिक तंत्र का सर्वोत्तम आविष्कार है।

भूल भारी की भाई

सौ दिन आपत्काल से,
सौ से ज्यादा काम,
हर बीमारी की दवा,
करती काम तमाम,
करती काम तमाम,
भूल भारी की भाई,
सतालिस मे एमर-
जेंसी क्यो न लगाई,
कह कैदी कविराय,
उबल है एमरजेन्सी,
भोली जनता, देते जाओ,
झांसा - झांसी।

मीसा मंत्र महान

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शस्त्रागार का एक अच्छा हथियार था रौलट एक्ट। सीमा बाँधना आरम्भ हुए तो कानून अपना उस युग में बड़ा रखवाला सुधार और धारदार हथियार साबित हुआ। अपवादों में ऐसे न मामला को हर गली-कूचे में टहलता रखा था। और जब सीमा गांधी की गद्दी की रक्षा न्याय के औचित्य की क्षमता से परे हो गई तो पद शासित सीमा ने समाना। जहाँ सीमा की परिधि समाप्त होती थी वहाँ से न्यायालय की परिधि चालू होती थी। जब सीमा बोलता तो न्याय मौन रहता था। कवि सीमा का बन्दी था पर कविता आज़ाद थी। उसने तक्षकाय स्वाहा के साथ 'इन्द्राय स्वाहा' का पुनरुद्घोष किया।

मीसा मन्त्र महान

दोषी औ' निर्दोष मे,
जिसकी दृष्टि समान,
वीजा है वह जेल का,
मीमा मन्त्र महान,
मीसा मन्त्र महान,
राजगद्दी का रक्षक,
इन्द्राणी को लेकर,
स्वाहा होगा तक्षक,
कह कैदी कविराय,
मार मीसा की मारी,
रौलट की सन्तान,
त्रस्त है जनता सारी।
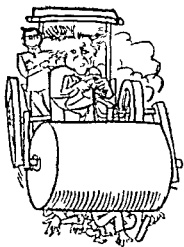
हर गला तानाशाही के पलत हाथों की जकडन महसूस कर रहा था। सेंसर पर अखबारों का ही एकाधिकार नहीं था चिट्ठियां भी सेंसर डेस्क पर एक दिन विश्राम करके पहुंचती थीं। अदृश्य आंखों कानों और हाथों के आतंक तले आदमी निहायत बौना और तुच्छ हो गया था। तानाशाही में सरकारीकरण का आलम यह था कि जीवन की आम हलचल दिन ब दिन ज्यादा नियंत्रित होती जा रही थी। यह कुण्डली उसी नियंत्रण की परादृश है।

कार्ड की महिमा

पोस्ट काड मे गुण वहुत,
सदा डालिए काड,
कीमत कम, सेसर सरल,
वक्त बडा है हाड,
वक्त बडा है हाड,
सम्हल कर चलना भैया,
बडे-बडा की फूक सरकती,
देख सिपहिया,
कह बैठी रविराय,
काड की महिमा पूरी,
राशन, भाषण, शादी-
ब्याही, काड जरूरी।

वक्त का पासा

लोकतन्त्र का क्षय नहीं,
 यह है 'नया स्वराज्य',
इसके सम्मुख मात सब,
 राम राज्य भी त्याज्य,
राम-राज्य भी त्याज्य,
 व्यर्थ सिंहासन छोड़ा,
पीस पीस कर धर देते,
 बनता जो रोड़ा,
कहें कवि कविराय,
 वक्त का पासा तगड़ा,
खादी वालों ने खादी
 वालों को पकड़ा।

आपातकाल के तुरंत बाद संजय गांधी सत्ता के गैर संवैधानिक शक्ति केंद्र के रूप में प्रकट होते गए। राजकाज के निर्णय लेना, केंद्रीय मंत्रियों व मुख्यमंत्रियों को निर्देश देना, पुरस्कृत या दंडित करना आदि कार्यकलाप उनके अधिकार क्षेत्र में आ गए। मुख्यमंत्रियों से लेकर छोटे मोटे सरकारी अफसर श्री संजय गांधी की आज्ञा पालन करने में सौभाग्य मानने लगे। [illegible] ने नेहरू खानदान और पारिवारिक तानाशाही को बिलकुल बेपर्दा कर दिया। प्रस्तुत कविता में दिल्ली दरबार की इस दशा की प्रतिक्रिया है।

छोटे सरकार

सब सरकारों से बडे,
　　　　है छोटे सरकार,
गुड्डी जिनकी चढ रही
　　　　दिल्ली के दरबार,
दिल्ली के दरबार,
　　　　बुढापा खिसियाता है,
पूत सवाया सिंहासन,
　　　　चढता आता है,
कह काका कविराय,
　　　　नावशाही की छुट्टी,
नेता राज करेगा,
　　　　पीकर मुगली घुट्टी।

इन्दिरा-भक्ति-महिमा

हफ्ता 'हिन्दुस्तान' मे,
एक नया त्यौहार,
इन्दिरा की एकादशी,
सुन ले सब संसार,
सुन ले सब संसार,
करे जो नाम कीर्तन,
पुलिस न फटके पास,
पास मे नगद नारायण,
कह कैदी कविराय,
छोड दे ता-था थया,
सब तज, तू भज
एक इन्दिरा देवी मैया।

ठाट-बाट तगड़ा

दिल्ली में दरबार दो,
छोटा और बड़ा,
सुबह शाम मुजरे झड़,
ठाट बाट तगड़ा,
ठाट बाट तगड़ा,
पुलिस का पहरा बहुत कड़ा,
जी हुजूरिया की जड़ जमती,
लोकतंत्र उखड़ा,
कह कैदी कविराय,
अभी तक पासा ठीक पड़ा,
मतदाता ने मुहर लगाई,
गाय और बछड़ा।

पेंशन

पार्लियामेंट ने कर दिया,
पेंशन का बिल पास,
जितना वेतन उतनी पेंशन,
एक नया इतिहास,
एक नया इतिहास,
पेंशन पांच साल में,
सेवा धर्म महान,
फिर क्यों फटे हाल में ?
कह कैदी कविराय,
पेंशन बड़ी जरूरी,
टिकट मिले ना मिले,
उड़ेगी हलुआ पूरी !

सब दस नम्बरी

नम्बर दो है कौन ?

पूछा श्री चव्हाण से
नम्बर दो है कौन,
औचक भौचक से रह,
पल भर साधा मौन,
पल भर साधा मौन,
न कोई नम्बर दो है,
केवल नम्बर एक,
शेष सब जो है, सो है,
कह कैदी कविराय,
नई गणना गुणाक्षरी,
नारी नम्बर एक,
पुरुष सब दस नम्बरी।

आजीवन सेवा ?

"तीस साल सेवा करी,
जानत सकल जहान,
पदलिप्सा से दूर हूं",
बोले श्री चव्हाण,
बोले श्री चव्हाण,
बटने भर का कर दो,
घर, बाहर, रक्षा, शिक्षा,
जहां चाहे धर दो,
कह काकी कविराय,
नहीं होंगे ये टायर,
तीस साल की सेवा पूरी,
करो रिटायर।
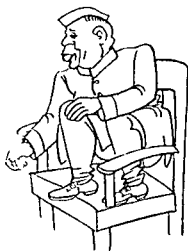
भूतपूर्व श्यामला चौधरी बंसीलाल आदमी बाराचार ग नगर यथा बड़ी आम सभाओं में गौरवपूर्वक स्वयं की श्रीमती गाथा की खबर बताया करते थे। सिर्फ स्मरजमी तक बसी बजन का कवि का आकलन किता मगी गाविन ना।

बजेगी तब तक बंसी

बोले बंसीलालजी,
जीवन-भर का दास,
पद से कुछ पाना नहीं,
पद पद्मा की घास,
पद पद्मा की घास,
चरें माता के वाहन,
ढेंचू ढेंचू करें,
रात दिन स्तुति गायन,
वह कैदी कविराय,
जब तक एमरजेंसी,
दिल्ली के दरबार,
बजेगी तब तक बंसी।

पड़ेगी बिना भाव की

मरने पर सर फोड़ते,
जीते जी अनखाय,
कामराज के मित्र हैं,
सुब्रमण्य कहलाय,
सुब्रमण्य कहलाय,
साथ सत्ता का देते,
त्यागपत्र देकर, झट
वापस कर लेते,
कह काकी कविराय,
इन्हें चिन्ता चुनाव की
कामराज के बिना,
पड़ेगी बिना भाव की।

वरुआ विरुदावली

"इन्दिरा इण्डिया एक है",
इति वरुआ महाराज,
अकल घास चरने गई,
चमचों के सरताज,
चमचा के सरताज,
किया अपमानित भारत,
एक मृत्य के लिए कलंकित,
भूत, भविष्यत्,
कह कैंदी कविराय,
स्वर्ग से जो महान् है,
कौन भला उस भारत
माता के समान है ?

मिद्धाथशवर राय बगाल के तत्कालीन मुग्यमत्री उन तीन लागा म स थ जो १२ जून १९७५ के बाद श्रीमती गाधी के साथ चट्टान की तरह खड हो गए। तानाशाही को कानूनी जामा पहनाया लेकिन वचार आपातकाल म मजय शक्ति की कोप कृपा स भा ान हो गए। और कनवला के मूबदार का उखाड फेंकने का चक्र चलाया खद मजय न।

उडीसा की मुख्यमत्री नदिनी मत्पथी को उखाड फेंकन म उत्पन्न हुई गर्मी म सजय को धीरे चलो की नीति समझ म आई वरना सिद्धार्थ तपोवन को जा ही चुके थ।

चले सिद्धार्थ तपोवन

कलकत्ता मे मच रहा,
काग्रेस मे जग,
चीफ मिनिस्टर की हुई,
खामी हुलिया तग,
खामी हुलिया तग,
रग कुछ ऐसा बिगडा
माया चली न एक,
लगा रगडे पर रगडा,
कह कदी कविराय,
नई दिल्ली से अनबन,
राजपाट को छोड,
चले सिद्धाथ तपोवन ।

पुन चमकेगा दिनकर

१५ अगस्त के आज़ादी के उत्सव के दिन कवि ने विसर्जित स्वाधीनता की वेदना को वाणी दी है इस कविता में। प्रजातंत्र के सबसे स्तंभ को एक एक करके गिरते देखकर कवि घोर निराशा की अतल गहराई में पहुँचता है और जाने कहाँ से तत्काल विश्वास खोज लाता है भोर के आगमन का! इतिहास चक्र के अंतिम पाप को समझ या सत्य की सनातन विजय पर अडिग श्रद्धा के अतिरिक्त और क्या हो सकता है यह?

पुन चमकेगा दिनकर

आजादी का दिन मना,
नई गुलामी बीच
सूखी धरती, सूना अंबर,
मन आगन म कीच,
मन आगन मे कीच,
कमल सारे मुरझाए,
एक एक कर बुझे दीप,
अधियारे छाए
कह कैदी कविराय,
न अपना छोटा जी कर,
चीर निशा का वक्ष,
पुन चमकेगा दिनकर।

बजेगी रण की भेरी

दिल्ली के दरबार में,
кौरव का है जोर,
लोकतन्त्र की द्रौपदी,
रोती नयन निचोर
रोती नयन निचोर,
नहीं कोई रखवाला,
नये भीष्म, द्रोणों ने
मुख पर ताला डाला,
कह कैदी कविराय,
बजेगी रण की भेरी,
साठ कोटि जनता,
न रहेगी बनकर चेरी।

सत्यमेव जयते की अखण्ड परम्परा में जिस समाज की सहस्राब्दियों तक शिक्षा दीक्षा हुई हो वहाँ का राजनेता कृष्ण मन्दिर में पाप का घड़ा भरने के अद्भुत विश्वास से भरा हो तो आश्चर्य क्या ?

यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।

का संकल्पवान अनुवाद करते हुए महाभारत की चरम परीक्षा के लिए कवि यहाँ से आत्मबल का संचयन कर रहा है।

महाभारत होता है

जन्म जहां श्रीकृष्ण का,
वहां मिला है ठौर,
पहरा आठों याम का,
जुल्म-सितम का दौर,
जुल्म सितम का दौर,
पाप का घड़ा भरा है
अत्याचारी यहां,
कंस की मात भरा है,
कह कैदी कविराय,
धर्म गायन होता है
भारत में तब सदा,
महाभारत होता है।

सत्यमव जयत का अखण्ड परम्परा म जिस समाज का सहस्राब्दियो तक शिक्षा दीक्षा हइ हा वहा का राजनता कृष्ण मन्दिर म पाप का घडा भरन क अद्भत विश्वास स भरा हो ता आश्चय क्या ?

यदा यदा हि धमस्य
ग्लानिभवति भारत ।
अभ्युत्थानमधमस्य
तदात्मान सजाम्यहम ।।

का सकल्पवान अनुवाद करत हुए महाभारत की स्म परीक्षा क लिए कवि कहा स आत्मबल का सचयन कर रहा ह ।

महाभारत होता है

जन्म जहा श्रीकृष्ण का,
वहा मिला है ठौर,
पहरा आठों याम का,
जुल्म-सितम का दौर,
जुल्म सितम का दौर,
पाप का घड़ा भरा है,
अत्याचारी यहा,
कंस की मौत मरा है,
कह हिंदी कविराय,
धर्म गारत होता है,
भारत में तब सदा,
महाभारत होता है।

आपातकाल में डॉ० सुब्रह्मण्यम स्वामी का भूमिगत होना, तमाम बन्दोबस्त के बावजूद विदेश चले जाना, वहाँ तानाशाही के खिलाफ प्रचार अभियान आयोजित कर भारत सरकार को परेशान कर देना अपने आपमें बड़ी भारी कारगुजारी था।

लेकिन विदेश से लौट आना और ठाठ से संसद भवन में पूरी गुर ारमक नाटकबाजी के बाद निकल जाना अपने आपमें एक ऐतिहासिक चमत्कार था। बड़ी किरकिरी सारे देश में खिलखिलाती फिरी पर की वर्षा जब कृपि गुप्तान ! कमेटी बनी और डॉ० स्वामी की संसद-सदस्यता रद्द कर दी गई। यह कविता इस स्थिति पर अटलजी की प्रतिक्रिया है।

खूब जमाया रग

स्वामीजी ने कर दिया,
दुनिया भर का दग,
आये और चले गय,
खूब जमाया रग,
खूब जमाया रग
सुरक्षा काम न आई,
चिडिया उड गई फुर,
बडी बिल्ली खिसियाई
कह कदी कविराय,
बनाओ नाक कमेटी
नाक कटी सो कटी,
न कटकर वापस लौटी।

ललितनारायण मिश्र की हत्या की बात आपातस्थिति को लागू करने के सिलसिले में श्रीमती गांधी ने २६ जून, ७५ के अपने प्रसारण में उठाई थी। बाद में उन्हें शहीद बनाया गया, जबकि ललित बाबू ने कांग्रेसी भ्रष्टाचार की प्रतिमूर्ति बन गए थे। स्वयं अटलजी ने संसद में उनके भ्रष्टाचार का भण्डाफोड़ सरकार का निरुत्तर कर दिया था।

नैतिक राजनैतिक मूल्यों के अवमूल्यन की श्रीमती गांधी ने कभी चिन्ता नहीं की। नागरवाला काण्ड, लाइसेंस काण्ड से लेकर मारुति काण्ड तक अनगिनत भ्रष्टाचारों ने राजनैतिक मूल्यहीनता का वातावरण बना दिया। बंसीलाल जैसे भ्रष्ट व्यक्ति सम्मानित थे। प्रमाणित भ्रष्टाचार के हीरो श्री के० डी० मालवीय मंत्री बन गए थे।

फिर आपातस्थिति में भ्रष्टाचार अनियंत्रित हो गया। मूल्यहीनता की इस अराजक स्थिति में कवि ने व्यथा व्यक्त की है।

सारे बगुले भक्त

वक्त वक्त की बात,
　　　　भ्रष्ट हो गए हुतात्मा
सारे बगुले भक्त,
　　　　नष्ट हो संशयात्मा,
संशयात्मा नष्ट,
　　　　कीर्ति कालिमा कौंधती,
चली मारुती सदा
　　　　चार को सपट रौंदती,
कह कदी कविराय,
　　　　मूल्य जीवन के बदले,
पदमश्री पायेंगे जो,
　　　　करते है घपने।

नजरबन्दी नजराना

नजरबन्द नेता किए,
　　　　जिनकी नजर तेज
नजर न लग जाए कहीं,
　　　　नजरों से परहेज,
नजरों से परहेज,
　　　　उतारो नजर उनकी
नजर मिलाते पानी-
　　　　पानी नजरें जिनकी,
वह बंदी कविराय,
　　　　नजरबंदी नजराना,
टेढ़ी नजरें सीधी,
　　　　ले जाती जेलखाना।

सूखती रजनीगंधा

कहु सजनी ! रजनी कहा ?
अंधियारे मे चूर,
एक बरस मे ढर गया,
चेहरे पर से नूर,
चेहरे पर मे नूर,
दूर दिल्ली दिखती है,
नियति निगोडी कभी,
कथा उल्टी लिखती है,
कह कैदी कविराय,
सूखती रजनीगधा,
राजनीति का पडता है,
जब उल्टा फदा !

द्रोण नाचे दे तारी

द्वापर मे अर्जुन हुए,
कलियुग अर्जुन दास,
सजय कहते थे कथा,
अब लिखत इतिहास
अब लिखते इतिहास,
द्रौपदी लाज बिसारी,
देख रहे धृतराष्ट्र,
द्रोण नाचे दे तारी,
कह कैदी कविराय,
कर्म की गति न्यारी है
धर्मराज पर अब भी,
दु शासन भारी है।

बनने चली विश्व-भाषा जो

हिन्दी के मसाले को एक नये कोण में प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी भक्ति के कर्मकाण्ड और हिन्दी भक्ति के जाप मात्र करने से हिन्दी दासी से पटरानी नहीं बनेगी यह चेतावनी हिन्दी के पण्डों को स्पष्ट दी गई है।

विश्व-भाषा का सपना

हिंदीदा हुलसे फिर,
मार लिया ज्या तीर,
मारीशस की भूमि पर,
छिड़का गंगा नीर,
छिड़का गंगा नीर,
साथ में अक्षत, रोली,
चंदन घिसती रही
मुफ्त की पण्डा-टोली,
कह चंदी रविराय,
विश्व भाषा का सपना,
पूरा होगा, सिर्फ मत
हिंदी का जपना।

मारा-ारा का राजधानी पाटलुई म हए विश्व हि-ा सम्मनन पर टीका की है कवि न -गम। निरावरण -ागरा क स्वाग- जमना- की आर सकत है। कविता म नवपण्डा की औपचारिक और सार्वनिक हि-ी प्रेम क प्रति एक वितष्णा है।

नवपण्डों की भीर

पोटलुई के घाट पर,
नवपण्डो की भीर,
राली, अक्षत, नारियल,
सुरसरिता का नीर,
सुरसरिता का नीर,
लगा चदन घिस्सा,
मैया जी ने औरा
का भी हडपा हिस्सा,
कह कदी कविराय,
जयतु जय शिवसागर जी
जय भगवती जागरण,
निरावरण जय नागर जी !

चले जब हिन्दी घर मे

हिन्दी का मेला हुआ,
मारीशस मे खूब,
गन्ने की रसधार मे,
उतरे श्रोता डूब
उतरे श्रोता डूब,
कुछ अगरेजी वाले
फ्रेंच और क्रियोल
खोपडी चढकर डोले
कह कैदी कविराय,
चले जब हिन्दी घर मे
तब बेचारी पूछी
जाए दुनिया भर म ।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में एक प्रस्ताव के द्वारा हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में मान्यता दिलाने का संकल्प किया गया था। अटलजी ने इस कविता में उस संकल्प पर प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

जब सारा प्रशासन-तंत्र अंग्रेजीमय हो, हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाएं घर में ही दासी हों, तब हिन्दी को विश्व भाषा बनाने की मांग हमारी प्राथमिक चिन्ता का विषय नहीं हो सकता। पहला काम होना चाहिए भारत में अंग्रेजी के दुर्जय गढ़ को तोड़ना। कवि के अनुसार हिन्दी की व्यावहारिक शक्ति की कसौटी यही हो सकती है।

अपने घर मे दासी

बनने चली विश्व-भाषा जो,
　　अपने घर म दासी,
सिंहासन पर अगरेजी है,
　　लखकर दुनिया हासी,
लखकर दुनिया हासी,
　　हिंदीदा बनते चपरासी,
अफसर सारे अगरेज़ीमय,
　　अवधी हो, मद्रासी
कह कैदी कविराय,
　　विश्व की चिंता छोडो,
पहले घर मे
　　अगरेजी के गढ को तोडो।
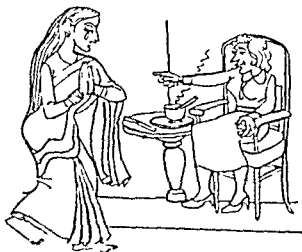
कवि अपन जावन की जन-यात्राओ का स्मरण करता हुआ लौटकर १९४२ म पहुच गया है जब आज़ादी की लडाइ म पहली बार व जल गए थ। गोडा का बलरामपुर क्षेत्र अटलजी का गमनीय निवाचन क्षत्र रहा है। योजना बन्दो आन्दोलन महगाइ विरोधी आन्दोलन और गिरफ्तार कायकर्ताओ की मुक्ति क सिलसिल म अटलजी गान्दा तिहाड माताहारी और हजारीबाग जल म रह चुक ह। वगनार जल का कवि जिस मानसिकता क साथ चल रहा था उसकी एक झलक इसम मिलती है।

बसेरा

प्रथम आगरा, फिर गोंडा,
    फिर दिल्ली जेल तिहाड़,
मालीहारी और हजारी,
    टूटा नहीं पहाड़,
टूटा नहीं पहाड़,
    ससुरघर स्वल्प बसेरा,
अब लक्षण कुछ भिन्न,
    राहु के ग्रह ने घेरा,
कह कैदी कविराय,
    मिला आराम न मांगे,
बंगलोर का जेल,
    हमें कुछ नीका लागे।

खुद पर हसना ऊंची मनोदशा का द्योतक माना जाता है। इस कुण्डली में कवि ने अपनी व्याधि की चर्चा की है। योग के माध्यम से स्वास्थ्य साधना का उपहास करते हुए वे स्वयं पर व्यंग्य भी करते हैं। शीर्षासन की कटु अनुभूति व्यायाम और योग के प्रति उनकी शारीरिक निष्ठा की पोल खोलकर रख देती है। जहां तक हम पत्रिकाओं के माध्यम की जानकारी है व्यायाम और योग ने अटलजी को कभी पसन्द नहीं किया। अलबत्ता प्रातःकाल घूमने के प्रति उनका जबरदस्त अनुराग है।

किया ऐसा शीर्षासन

योग, प्रयोग, नियोग
 की चर्चा सुनी अपार,
रोग सदा पल्ले पड़ा,
 खुला जेल का द्वार,
खुला जेल का द्वार,
 किया ऐसा शीर्षासन,
दुनिया उलटी हुई,
 डोल उठा सिंहासन,
कह बंदी कविराय,
 मुफ्त की मालिश महंगी,
बंगलौर के अस्पताल,
 की याद रहेगी।
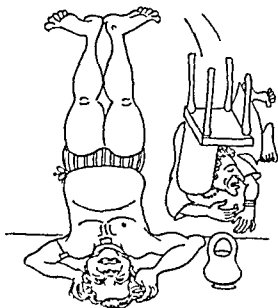
बेचैनी की रात

बेचनी की रात,
प्रात भी नही सुहाता,
घिरी घटा घनघोर,
न कोई पछी गाता,
तन भारी, मन खिन्न
जागता दद पुराना,
सब अपने मे मस्त,
पराया कष्ट न जाना,
कह कदी कविराय,
बुरे दिन आने वाले,
रह लगे जैसा,
रखेगा ऊपर वाले !

शंकर ही रक्षक

योगासन अति श्रेष्ठ है,
सदा कीजिए योग,
तन ताजा, मन मोदमय,
पास न फटके रोग,
पास न फटके रोग
सृष्टि को उलटा देखा,
कंकड़ पत्थर हजम,
वज्र आसन लेखा,
कह कवि कविराय
श्याम बाबू सा शिक्षक
मिले अनाड़ी शिष्य,
सिर्फ शंकर ही रक्षक !

लोकनायक जयप्रकाश अटलबिहारी वाजपयी स लकर हजारा छोटे बड कायकर्ता जलो म बीमार पड़े। लगभग ८० जलवासी लोग स्वगवासी हो गए। लोकनायक जीवन भर क लिए असाध्य बीमारी लकर निकल।

जब अटलजी की बीमारी बढ़ गई ता उनक स्वास्थ्य क बारे म तरह तरह क बुरे समाचार लोग चिन्ता क विषय बन गए। मरणास न लोकतन्त्र भयाकुल समाज और कदी जीवन म बीमार काया की बचनी सुबह की इन्तजार करन लगी। कविता म दाहर दद स कवि की लड़ाई का चित्रण है।

दोहरा दर्द

दर्द कमर का तेज,
रात भर लगी न पलक,
सहलाते बस रहे,
एमरजेन्सी की अलक,
सब नींद में चूर
ऊंघने सभी सिपाही,
कंठ सूखना, पर
उठने की सख्त मनाही,
वह बंदी कविराय,
सवेरा कब आएगा ?
दम घुटने लग गया,
अंधेरा कब जाएगा ?

जेल की सुविधाएँ

डाक्टरान दे रहे दवाई,
पुलिस दे रही पहरा,
बिना ब्लेड के हुआ खुरदरा,
चिकना चुपड़ा चेहरा,
चिकना चुपड़ा चेहरा,
साबुन, तेल नदारद,
मिले नहीं अखबार,
पढ़ेंगे नई इबारत,
कहँ काका कविराय,
कहाँ से लाएँ कपड़े
अस्पताल की चादर,
छुपा रही सब लफड़े।

विडम्बनाओं का अटूट घेरा आपातकाल का अंधेरा जेल का अंधेरा घनघोर अत्याचारों का अंधेरा और उसके सामने टिमटिमाती दीवाली।

दरिद्रता के अजय दुर्गों का तना हुआ सीना हाहाकार रोदन और बुझे हुए चेहरे पेट की अशमित अग्नि की सवभक्षी लपटें और लक्ष्मीपूजन की रस्म अदायगी। अनुपलब्ध लक्ष्मी का पूजन।

बदलो! बदलो की आवाज क्रांति के नारे समग्र क्रांति की व्यग्रता और फिर परिवर्तन! कैसा परिवर्तन? नया परिवर्तन यानी झुग्गियों को शहर से हटाकर मध्ययुगीन सामंती शैली में गाव या शहर के बाहर स्थानान्तरण।

जब आपातस्थिति अपनी चरम सीमा पर थी कवि ने घोर निराशा के क्षणों में ये पंक्तियां लिखी

तम उगलने लग गया दिनमान!
दोपहर में दिवस का अवसान!
दीप मिट्टी का करेगा क्या भला?
खा लिया जब सृष्टि का ही दान?

दीवाली

दूर दीवाली,
पास अँधेरा,
चार दीवारी,
रगता घर,
हटी गरीबी,
लक्ष्मी - पूजा,
गिरी झापटी,
नव परिवर्तन,
घिरी अमावस,
दीप बुझ गए,
पासा पलटा,
साधु लुट गए।

दवी और आसुरी प्रवत्तियो का सघष अनवरत चलन वाली प्रक्रिया है। सघष क उपकरण बदल जात ह कारण वही रहना है।

ववयी कोई और हा जाए पुत्र व राजपाट का सवाल वही रहता है। काल भल सहस्राब्दियो की यात्रा कर ल चरित्र नहा बदलता आसुरी प्रवत्ति अपनी व्यक्तिगत कामना क लिए समाज को सकट म डालन म सकोच नहीं करती।

कवि विजयादशमी क दिन दवासुर सग्राम की प्रतीकात्मक लडाई दखकर क्ष ुब्ध है। उस प्रतीकात्मक सघष की हर साल सालगिरह मनात मनात समाज क दृष्टिपथ स असली सघष क कही ओझल हो जान की आशका हो गई है। इसीलिए वह समाज शक्ति का आह्वान करता है। समाज शक्ति कि विमुख तमाम पराजया क बाद भी जय की सम्भावनाए पलती रहती है।

यह कविता भी आल इण्डिया मेडिकल इ स्टीच्यूट म लिखी गई।

विजयादशमी

(१)

दस मजिल ऊपर से चढकर देखा रावण जलता,
सदियो से स्वाहा होकर भी पाप निरतर फलता,

(२)

राम-विजय की कथा पुरानी, किन्तु युद्ध जारी है,
राजपाट के लिए अयोध्या फुकने की बारी है,

(३)

मा की ममता ने समाज को फिर सकट म डाला,
न्याय निरादृत हुआ, धर्म ने पाया देश-निकाला,

(४)

साठ कोटि भारतवासी क्या दर्शक बन रहेंगे ?
सत्ता के तन पर मुट्ठी भर कब तक तने रहेंगे ?

संसदीय समिति की बैठक के लिए श्री अटलबिहारी वाजपेयी, श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री मधु दण्डवते और श्री श्यामनन्दन मिश्र जब बंगलौर पहुँचे ही थे कि आपातस्थिति लागू हो गई थी। वे वहीं बन्दी बनाए गए और साथ-साथ जेल में रखे गए।

जेल जीवन का सान्निध्य जहाँ निकट सम्बन्धों की गहरी बुनियाद बनाता है वहाँ प्रवृत्तियों की गहरी समझ भी बढ़ाता है।

जेल जीवन ने नेताओं के तल पर भी पार्टियों की सीमाओं को तोड़ डाला था। कार्यकर्ताओं के तल पर यह सान्निध्य ज० प्र० आन्दोलन के समय हुआ था। चुनाव के समय जनता पार्टी का जन्म हुआ। लगता है कि जेल में ही शिशु जनता पार्टी के लिए लोरियाँ लिखना लग गया था।

जमी चौकडी

दण्डव्रते मधु मे भरे,
व्यग्य, विनोद प्रवीण,
मित्र श्याम बाबू सुभग,
अलग बजावे वीन,
अलग बजावें वीन,
तीन मे, ना तेरह मे,
लालकृष्णजी पोथी
पढते है डेरा म,
यह बंदी कविराय,
जमी थी खूब चौकडी,
खोट पीस का खेल,
जेल मे घडी दो घडी।

आल्हा वीररस का अद्भुत लोक काव्य है। चमत्कारी शौर्य और पराक्रम के धनी आल्हा और ऊदल उसके नायक हैं। उत्तर भारत के गांवों में आल्हा के छंद बारम्बार आज भी गाने वाले तो गाने वाले सुनने वालों की भुजाएं फड़कने लगतीं।

आपातकाल में ऐसा ही चमत्कारी शौर्य प्रकट किया था प्रो० सुब्रमण्यम स्वामी ने। प्रो० स्वामी का सारी व्यवस्था को धता देकर देश से निकल जाना, तमाम बाधाओं के बावजूद विदेश में लोकमत की अलख जगाना और इंदिरा गांधी के प्रचार तंत्र को मात देना, फिर पूरे पुलिस बन्दोबस्त के बावजूद सीधे राज्यसभा में चमत्कार की तरह प्रकट होना, देखते देखते पुलिस की घेरेबन्दी के बीच से अन्तर्धान हो जाना और फिर विदेश चले जाना ये ऐसी घटनाएं थीं कि आपातकाल की लोकगाथाएं बन गई थीं।

कवि ने आपातकाल के ऐसे वीर शिरोमणि की कीर्ति का बखान किया है और तहे दिल से किया है। स्वामी आल्हा में कवि ने असंयमित शौर्य के पैरों में पलक पावड़े बिछा दिए किन्तु वाणी संयम की ओर सर्वत्र उन्होंने निःसंकोच किया है।

स्वामी आल्हा

अंतरिक्ष ते प्रकटे स्वामी,
संसद भवन गयो थर्राय,
पानी पानी पुलिस हो गई,
सत्ता गई सनाका खाय,
पहरे पर पहरा, पर सेहरा
स्वामी के माथे सोह,
पहुंच गए जब राज्य सभा में,
पालम पे रस्ता जोहे।

पहले स्वामी भए नदारद,
मुंह बाए ठाडी सरकार,
खिसियानी सी खंभा नोचे,
पत्नी पर कर अत्याचार,
पहुंच विदेशेन मा स्वामी ने,
सत की धजा दइ फहराय,
लोकतंत्र की हत्या सुन के,
दुनिया गई सनाका खाय।

लाखन डारे है जेलन में,
बीबी - बच्चे रहे बिलखाय,
अखबारन का गला घोट के,
मां - बेटे दोनों सन्नाय,
जंगल को कानून चलत है,
रानी जो कर दे सो न्याय,
बेनकाब कर दीन्ही स्वामी,
अपनी चेहरा दियो दिखाय।

स्वामी नाकनल को रक्षक
हिम्मत वारा वीर जवान
देस-दम मा अलख जगा दी
धरे हथेली पर निज प्राण
जा गद्दार कह स्वामी का
मा मूरख या धरत होय
अन्यायी शासन स लडना
राष्ट विरोधी कृत्य न कोय ।

धूल झाक मोटी आंखिन म,
स्वामी अतर्धान भाग
टुकुर टुकुर सब रह दखते
राज्य सभा म पहुच गए,
देख सदन म स्वामीजी को
नसीनान रहे मुह वाय,
हाथ पाव फूल महना के,
मेम्बर गए सभी चकराय।

उठा व्यवस्था के सवाल को,
पीट दियो अपनो डका
खुले द्वार सो वाहर निकरो,
मत्रमुग्ध मारी लका
... दुरस्त हुए जब,
तब स्वामी गयो विलाय
... भाग न जाए,
रही चिल्लाय ।

स्वामी माता को सपूत है,
स्वामी दूजो नेताजी,
गर वाणी पर सयम राखे,
जीतेगा जरूर बाजी,
धन्य - धन्य है वे सहयोगी,
जिन स्वामी का साथ दियो,
जानो, आनो, फिर छिप जानो,
दुःशासन को मात किया,
बन्द करो स्वामी की आल्हा,
अभी लड़ाई बाकी है
लाखा स्वामी जय रहे है,
यह छोटी सी झाकी है।

स्वामी लोकतंत्र या रक्षक
हिम्मत वारा वीर जवान,
दम-देस मा अलख जगा दी
धरे हथेली पर निज प्राण
जो गद्दार वह स्वामी वो,
सो मूरख या धूरत होय
अ यायी शासन से लडना
राष्ट्र विरोधी कृत्य न कोय।

धूल झाक मोटी आखिन म,
स्वामी अतर्धान भए
टुकुर टुकुर सब रहे देखत,
राज्य सभा म पहुच गए,
देख मदन म स्वामीजी को,
वसीनान रह मुह वाय,
हाथ पाव फूले महना के
मेम्बर गण सभी चकराय।

उठा व्यवस्था के सवाल को,
पीट दियो अपनो डका
खुले द्वार सो बाहर निकरो,
मत्रमुग्ध मारी लका
होश-हवाश दुरुस्त हुए जब
तब तक स्वामी गयो विलाय
पकडो पकडो, भाग न जाए
इदिरा व्यथ रही चिल्लाय।

स्वामी माता को सपूत है,
स्वामी दूजा नेताजी,
गर वाणी पर संयम राखे,
जीतेंगे जरूर बाजी,
धन्य-धन्य हैं वे सहयोगी,
जिन स्वामी का साथ दिया,
जाना, आना, फिर छिप जाना,
दुःशासन को मात किया,
बन्द करो स्वामी की आरहा,
अभी लड़ाई बाकी है,
नाचो स्वामी जप रहे हैं,
यह छोटी सी झांकी है!

अब भी पहरेदार

बीत समय न काल समुद्र का स्थिर व्यू मिरर ग वकि निहार रहा है और चमत्कृत है उन पग्विजना का न्यकर जि न समय ना ग्वनती रीतों न हान म निवाना ना। राजनीति का रपटीली राह पर रपटता रपटता कवि राजनता पन क पडाव पर पहुचा और पन की जकडन का वहो म कमता अनुभव करता है। राजनता कवि की बचारगी पर वही तरम खा रहा है। आगमिप्यत जीवन क राग म मस्त कदी समय की फान्न क पहन पन पर वक्त की बनिहारी नी टिप्पणी न्ज करता है।

पुन: बन्धन ने जकडा

पहले पहरदार थे,
अब भी पहरदार,
तब थे तेवर तानते,
अब झुकते हर बार,
अब झुकते हर बार,
वक्त की है बलिहारी,
नजर चढाने वालो ने ही,
नजर उतारी,
वह बदी कविराय,
पुन बन्धन ने जकडा,
पहले मद ने और आजकल,
पद ने जकडा।

बीते समय क कान समुद्र का स्थिर व्य मिरर म रवि निहार रहा है और समझ रहा है उन परिवर्तनों का ग्राफ, जि न समय की गरजती रेला न हान म निकाला था। राजनीति की रपटीली राह पर रपटता रपटता कवि राजनेता पद क पडाव पर पहुचा और पद की जकडन को वही म कमता अनुभव करता है। राजनेता कवि की प्रचारगी पर वही नरम ख रहा है। आगमिष्यत जीवन क राग म मस्त कदी समय की फाइल क पन्ने पलटने पर वक्त की बनिहारी की टिप्पणी दर्ज करता है।

पुन: बन्धन ने जकडा

पहले पहरदार थे,
अब भी पहरदार,
तब थे तेवर तानते,
अब झुकते हर बार,
अब झुकते हर बार,
वक्त की है बलिहारी,
नजर चढाने वाला न ही,
नजर उतारी,
वह बँदी कविराय,
पुन बंधन ने जकडा,
पहले मद ने और आजकल
पद ने जकडा।

बीते समय के ज्ञान समुद्र को रियर व्यू मिरर से कवि निहार रहा है और चमत्कृत है उन परिवर्तनों को देखकर, जिन्हें समय की चलती लीला ने हाल में निबाहा था। राजनीति की रपटीली राह पर रपटता रपटता कवि राजनेता पद के पड़ाव पर पहुँचा और पद की जकड़न को कड़ी से कमता अनुभव करता है। राजनेता कवि की 'बेचारगी' पर कही तरस खा रहा है। आगमिष्यत जीवन के राग में मस्त कदी समय की फाइल के पट्टे पन पर वक्त की बलिहारी की टिप्पणी दर्ज करता है।

पुन बन्धन ने जकडा

पहले पहरेदार थे,
अब भी पहरेदार,
तब थे तेवर तानते,
अब झुकते हर बार,
अब झुकते हर बार,
वक्त की है बलिहारी,
नजर चढाने वालों ने ही,
नजर उतारी,
कह दर्दी कविराय,
पुन बन्धन ने जकडा,
पहले मद ने और आजकल,
पद ने जकडा।

यह कविता विस्मयशत्री वचन के बाद कूटनीति के व्याकरण और शस्त्रागार को आत्मसात करने की अटलजी की कोशिश है।

अतिम दो पक्तियो म दुनिया की अनावश्यक लफ्फेबाजी स दूर हट कर कवि कूटनीतिज्ञ राष्ट्र के द्रित होना चाहता है ताकि कूटनीति सफल उपकरण बन सके।

भावक मन व्यावहारिक दर्शन और आम चलताऊ पर सटीक भाषा अटलजी की पूजा है यही पूजी अपने मुखर मामूलीपन म अदभुत तेजस्विता के साथ प्रकट हुई है।

/ कभी कविराय की कुण्डलिया

कूटनीति का शस्त्रागार

देश निकाला मिल गये,
मंत्रालय फौरन,
कूटनीति के शस्त्र हैं,
वन नन और सन,
वन नन और सन,
छुरी-काँटे भी चलते,
पहले हाथ मिलाते,
फिर हाथों को मलते,
कह कदी कविराय
नापना सात समंदर
लेकिन पहले शक्ति
जुटाना घर के अंदर।

यह कविता विदशमत्री बनन क बाद कूटनीति क व्याकरण और शस्त्रागार को आत्मसात करन की अटलजी की कोशिश है।

अन्तिम दो पक्तिया म दुनिया की अनावश्यक लफडेबाजी स दूर हट कर कवि कूटनीतिज्ञ राष्ट्र का द्रष्टा होना चाहता है ताकि कूटनीति सफल उपकरण बन सक।

भावुक मन व्यावहारिक दर्शन और आम चलताऊ पर सटीक भाषा अटलजी की पूजी है यही पूजी अपन मुखर मामूलीपन म अदभुत तेजस्विता क साथ प्रकट हुई है।

कूटनीति का शस्त्रागार

देश निकाला मिल गया,
मंत्रालय फौरन,
कूटनीति के शस्त्र हैं,
बैन, नैन और सैन,
बैन, नैन और सैन,
छुरी काँटे भी चलते,
पहले हाथ मिलाते,
फिर हाथों को मलते,
कह कैदी कविराय,
लाँघना सात समंदर,
लेकिन पहले शक्ति
जुटाना घर के अंदर।

मत्रा ननन क वा अटलजा विरासत म मिली शासन प्रणाली क अभिशापा स त्रस्त है। व प्रणाली जिसम काय स सामा य काम भी नही होत और वह व्यवस्था जिसम सामा य काम भी मत्री क जरिय होत है। मफल मत्रित्व का वह मानदण्ड जिसपर सबक काम काज कराके खरा उतरा जा सकता है एक तरफ अपना पराया की स्वाथ रेखाकित हदबन्दी और दूसरी तरफ ६५ करोड का सपना अटलजी विरासत म मिली इस विडम्बना स रह रहकर टकरात है और फिर छिने हुए कधा को निहारत ह और फिर टकरात ह

/ क्या कविराय की कुण्डलिया

मंत्रिपद तभी सफल है

बस का परमिट मांग रहे हैं,
  भैया के दामाद,
पेट्रोल का पंप दिला दो,
  दूजे की फरियाद,
दूजे की फरियाद,
  सिफारिश काम बनाती,
परिचय की परची,
  किस्मत के द्वार खुलाती,
कहं कक्का कविराय,
  भतीजावाद प्रबल है,
अपनों को रबड़ी,
  मंत्रिपद तभी सफल है।

आपातकाल के दौरान अनेक भारतीय राजदूतों ने तानाशाही के वास्तविक चरित्र को छिपाया और उसे लोकतन्त्री आवरण में पेश किया। पश्चिमी देशों के बड़े महत्त्वपूर्ण राजदूतों ने गिरफ्तारियों की संख्या और भारतीय प्रेस पर लागू गए सेंसरशिप को छिपाने और मामूली बताने की जी तोड़ कोशिश की। इतना ही नहीं उन देशों में रहने वाले भारतीयों के तानाशाही के खिलाफ विश्व जनमत जाग्रत करने के प्रयास को जायज़ नाजायज़ हर तरीके से रोकने की भरसक कोशिश की। यह दूसरी बात है कि विदेशस्थ भारतीयों ने जनतंत्र मानव अधिकारों के सवाल पर विश्व जनमत जाग्रत करने में सफलता प्राप्त की।

इस पृष्ठभूमि में जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद विदेशमन्त्री अटलजी के सामने महत्त्वपूर्ण देशों में उपयुक्त राजदूत नियुक्त करने का प्रश्न आया। अमेरिका और ब्रिटेन में नानी पालकीवाला और नाना साहब गोरे की नियुक्ति अपने आपमें ऐसा निर्णय था जिनकी उपयुक्तता पर सब ओर सर्वथा अनुकूल प्रतिक्रिया हुई। इन पदों के लिए प्रश्न चयन का नहीं था प्रश्न था ढूँढने का। यह कविता विश्व राजनीति के इन महत्त्वपूर्ण पदों के लिए श्रेष्ठतम उपलब्ध मेधा के चयन पर कवि की अपनी प्रतिक्रिया है।

राजदूत

नाना, नानी की नियुक्ति से,
जनता है परमन्न,
राजदूत हो गये जैसे,
रुपया ठना ठन
रुपया ठना ठन
मान भारत का ऊंचा,
नम्र किंतु तेजस्वी,
माथा कभी न नीचा,
कह सदी कविराय,
दूत हनुमान समाना
सह न जा अपमान,
बुद्धि - गुण - शक्ति निधाना।

डर नहीं डर नहा डर नहा—इसका मनोवैज्ञानिक अर्थ है कि डर है और गहरा है और सिर पर चढ़कर बोल रहा है। कवि की आस्था है कर्मवाद पर। कर्मफल अवश्य मिलता है। कर्मफल पर लोकतंत्र या तानाशाही का अन्तर नहीं पड़ता। लोकतंत्र में तरीके से मिला दिखता। पाकिस्तान तंत्र में हो सकता है बेकायदे मिला दिखता हो पर है वह कहीं न कहीं कर्मफल ही।

विदेशमंत्री ने इसमें शिमला समझौता की कविता में आहूत किया है। उनके एक कप्तान भुट्टो साहब कैद में हैं दूसरा कप्तान भी कर्मफल से बच नहीं सकता।

कर्मफल

मुझे जेल का डर नहीं,
कहती बार-बार,
सचमुच में गर डर नहीं,
चिल्लाना बेकार,
चिल्लाना बेकार,
कर्म का फल न टलेगा,
बोया बीज बबूल,
कहाँ से आम फलेगा?
कह कैदी कविराय,
अकेले रह न भुट्टो
शिमला का समझौता,
सुख-दुख बाँट पिट्टो!

डर नही डर नगा डर नही—इमका मनावनानिक अथ है कि डर है और गहरा है और सिर पर चढ़कर बोल रहा है। कवि की आस्था है कमवाद पर। कमफल अवश्य मिलता है। कमफन पर लाकतत्र या तानाशाही का अन्तर नही पडता। लाकतत्र म तरीके स मिला दिखता। पाकिस्तान तत्र म हा मकता है वकायदे मिला दिखता हा पर है वह कहा न कहीं कमफन ही।

विदशमत्री न इमम शिमला समझौता का कविता म आहृत किया है। उसम एक कप्तान भुट्टा साहब कद म है दूसरा कप्तान भी कमफल म वच नहा सकता।

कर्मफल

मुझे जेल का डर नहीं,
    कहती बार-बार,
सचमुच मैं डरकर नहीं,
    चिल्लाना बेकार,
चिल्लाना बेकार,
    कर्म का फल न टलेगा,
बोया बीज बबूल,
    कहाँ से आम फलेगा?
कह बंदी कविराय,
    अकेले रह न भुगतो,
समता का समझौता,
    सुख-दुख बाँट बिट्टो।

जिस भांति आज श्रीमती इन्दिरा गांधी आपातकाल के भयानक अत्याचार और तानाशाही कारगुजारियों को नकार रही हैं उसकी एक अगली कड़ी यह भी हो सकती है जब वे साफ कह दें कि कौन-सी इमरजेंसी कब लगाई गई थी ?

उनपर और उनके पुत्र पर खुद समाज की खुली अदालत में उनके कारनामों से सम्बन्धित चलाए गए मुकदमों को अत्याचार कह दें और उसके आध को सारे आपातकाल के अत्याचारों के साथ तोल दें। विवेक शून्यता का सर्वोच्च शिखर है यह।

जिन लाखों लोगों ने भोगा है जिन करोड़ों लोगों ने अनुभव किया है उनकी आवाज़ को यथोचित दी है कवि ने यहां। उनके इन कारनामों का सिलसिला एक खीझ पैदा करता है।

यह कविता गिरफ्तारी के बाद आए श्रीमती गांधी के वक्तव्य पर अटलजी की प्रतिक्रिया है। इन दिनों अटलजी संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में भाग लेने के लिए अमरिका गए हुए थे। वहीं यह कविता रची गई।

यह सिर्फ ऐंठन है। जहां तक रस्सी का सवाल है वह जल गई है— हमेशा हमेशा के लिए।

ऐंठन

पहले कितने सितम हुए थे,
मुझे नही मालूम
लेकिन इतना मुझे पता है,
अब जुरमो की धूम,
अब जुल्मो की धूम,
लपटा मेरा बेटा,
जो फूलो मे पला,
कटको बीच घसीटा,
वह कैदी कविराय,
जल गई रस्सी सारी,
लेकिन गई न ऐंठ,
रची केहि विधि यह नारी !

मारीशस क विश्व हि न्दी सम्मलन म हिन्दी को विश्व भाषा बनान का प्रस्ताव पास हुआ था। अब तक विश्व म तीसर नम्बर पर सबस ज्यादा लागो के द्वारा बाली जान वाली भाषा गूगा रही है और उसस कम लागो की भाषाए सयुक्त राष्ट्र की मान्य भाषाए बन चकी है। भारत म भी भाषा वात्सल्य का तिरस्कृत रखा गया और मातभाषा उपक्षित रही है और शासक अग्रजी मम क प्रमपाश म बध रहे है।

अटलजी का उस पहल भारतीय नता हान का गौरव प्राप्त है जिसन सयुक्त राष्ट्र सघ म हि दी म भाषण दिया। पहली बार विश्व ने एक भारतीय क स्वाभिमान और स्वभाषाभिमान को अपन बहत्तर आकार म देखा।

अटलजी का हिन्दी प्रेम आन्दोलन या अभियान न होकर शुद्ध प्रेम है। यही कारण है कि जहा बहुत स अ यो की हिन्दी भक्ति स गर हिन्दी भाषी भारतीय शकित होत है वहा अटलजी की हिन्दी भक्ति वसी प्रति क्रिया उत्पन्न नही करती। उनकी हि दी भक्ति राष्ट्रवादी है।

अथ यह कि उनका हिन्दी प्रम भाषा प्रेम कम और राष्ट्र भक्ति अधिक है। और इसीलिए यह तब भी होती अगर वे सयोग स बगला भाषी या तमिल भाषी हात। उनक लिए उसका महत्त्व ज्यादा है कि हि दुस्तान का प्रतिनिधि अपनी भाषा म बाला बनिस्पत इसक कि हिन्दुस्तान हिन्दी म बोला।

/ कन्नी कविराय की कुण्डलिया

गूजी हिन्दी

गूजी हिन्दी विश्व मे,
स्वप्न हुआ साकार,
राष्ट सघ के मच से,
हिन्दी का जयकार,
हिन्दी का जयकार,
हिन्द हिन्दी मे बोला,
देख स्वभाषा - प्रेम,
विश्व अचरज से डोला,
वह कदी कविराय,
मेम की माया टूटी,
भारत माता धन्य,
स्नेह की सरिता फूटी।

मारीशस के विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी को विश्व भाषा बनाने का प्रस्ताव पास हुआ था। अब तक विश्व में तीसरे नम्बर पर सबसे ज्यादा लोगों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा गूंगी रही है और उससे कम लोगों की भाषाएं संयुक्त राष्ट्र की मान्य भाषाएं बन चुकी हैं। भारत में भी भाषा वात्सल्य का तिरस्कृत रखा गया और मातृभाषा उपेक्षित रही है और शासक अंग्रेजी मर्म के भ्रमपाश में बंधे रहे हैं।

अटलजी को उस पहले भारतीय नेता होने का गौरव प्राप्त है जिसने संयुक्त राष्ट्र मंच में हिंदी में भाषण दिया। पहली बार विश्व ने एक भारतीय के स्वाभिमान और स्वभाषाभिमान को अपने वृहत्तर आकार में देखा।

अटलजी का हिन्दी प्रेम आन्दोलन या अभियान न होकर, शुद्ध प्रेम है। यही कारण है कि जहां बहुत से अन्यों की हिन्दी भक्ति से गैर हिन्दी भाषी भारतीय शंकित होते हैं वहां अटलजी की हिन्दी भक्ति वैसी प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करती। उनकी हिन्दी भक्ति राष्ट्रवादी है।

अर्थ यह कि उनका हिन्दी प्रेम भाषा प्रेम कम और राष्ट्र भक्ति अधिक है। और इसीलिए वह तब भी होती अगर वे मयाग से बंगला भाषी या तमिल भाषी होते। उनके लिए इसका महत्त्व ज्यादा है कि हिन्दुस्तान का प्रतिनिधि अपनी भाषा में बोला बनिस्पत इसके कि हिन्दुस्तान हिन्दी में बोला।

न्यूयार्क

मायानगरी देख ली,
इद्रजाल की रात,
आसमान को चूमती,
धरती की बारात,
धरती की बारात,
रूप का रग निखरता,
रस का पारावार,
डूबता हृदय उबरता,
कह कदी कविराय,
बिकाऊ यहा जिदगी,
चमक - दमक मे छिपी,
गरीबी और गदगी !

न्यूयार्क भौतिक सम्कृति के सर्वोच्च शिखर पर पहुची सभ्यता का प्रतीक नगर है। विदेशमत्री के रूप म अटलजी सयुक्त राष्ट्र सघ की महा सभा म भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता के रूप म वहा गए थ। माया सस्कृति म जगत सत्य और ब्रह्म मिथ्या हो गया है' की अनुभूति उन्ह हुई प्रतीत होती है। इस स्थिति म व बिकाऊ वस्तुओ की सूची म मनुष्य और मनुष्यता के दाखिल हो जाने से मानव सस्कृति के भविष्य के प्रति आशकित हो उठ ह।

जहा अमीरी एक खास ढग स विपन्न हो रही है जहा सारी चमक दमक एक नय ढग की ग दगी बन रही है वहा उनका भारतीय हृदय डूबन लगता है। शायद इसलिए कि सारी दुनिया कदम-दर कदम उसक वशीकरण मत्र क जरिय विमोह विमूढ होती जा रही है।

कवी कविराय की कुण्डलिया

न्यूयार्क

मायानगरी दख ली,
इद्रजाल की रात,
आसमान को चूमती,
धरती की वारात,
धरती की वारात,
रूप का रग निखरता,
रस का पारावार,
डूबता हृदय उबरता,
वह कदी कविराय,
बिकाऊ यहा जिदगी,
चमक - दमक मे छिपी,
गरीबी और गदगी।

न्यूयार्क भौतिक संस्कृति के सर्वोच्च शिखर पर पश्चिमी सभ्यता का प्रतीक नगर है। विश्वमनीषी के रूप में अंग्रेजी में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता के रूप में वहां गये थे। मायावी संस्कृति में 'जगत सत्य और ब्रह्म मिथ्या हो गया है' की अनुभूति उत्पन्न हुई प्रतीत होती है। इस स्थिति में वे बिकाऊ वस्तुओं की सूची में मनुष्य और मनुष्यता के दाखिल हो जाने से मानव संस्कृति के भविष्य के प्रति आशंकित हो उठे हैं।

जहां अमीरी एक खास ढंग से विपन्न हो रही है जहां सारी चमक-दमक एक नये ढंग की गन्दगी बन रहा है वहां उनका भारतीय हृदय डूबने लगता है। शायद इसलिए कि सारी दुनिया कदम-ब-कदम उसके वशीकरण मंत्र के ज़रिये विमोह विमूढ़ होती जा रही है।

वाटरगेट

होटल वाटरगेट का,
जहा हुए थ पाप,
चले डुबान और का,
डूब निवसन आप
डूब निवसन आप,
फाट की किस्मत फूटी
दल दलदल म फसा
कीर्ति वाटर न नटी,
वह वदी वनिराय
धन्य जमगीरी जाता
गहा न भ्रष्टाचार
उखाडी जट स सत्ता।

अमरिका का वाटरगेट काण्ड लोकतन्त्र के माथे पर कलक का टीका है वही वह लोकतन्त्र के अजय परकोट पर फहराती वाली कांति पताका भी है। जहा यह लोकतन्त्र को सारहीन बना देने वाली उस कमजोरी का द्योतक है जिसका लाभ उठाकर भूतपूर्व राष्ट्रपति निक्सन ने अपनी सत्ता की बुजबान्दी की थी वहा वह लोकतन्त्र की उस आत्मशक्ति का प्रतीक है जिसम सिफ दो पत्रकारो ने सारी सत्ता को धूल चटा दी। इस अथ म यह काण्ड लोकतन्त्र की कमजोरी और शक्ति दोनो का प्रतीक है।

इस अथ म लोकतन्त्र अपराध न होने देन की छिद्रमुक्त पद्धति भले न हो लेकिन अपराधी को बचा न जाने की ताकत चाहे अपराधी दुनिया का सबस शक्तिशाली व्यक्ति अमरिका का राष्ट्रपति ही क्यो न हो लोकतन्त्र की कमजोरी म नही है।

यह कविता होटल वाटरगट म लिखी गई है। सवप्रभुता को अपने पास सभालकर रखन के लिए अमरिकी जनता के नाम कवि की बधाई इस कविता म दज है।

वाटरगेट

होटल वाटरगट का,
जहा हुए थे पाप,
चले डुबाने और को,
डूबे निक्सन आप,
डूबे निक्सन आप,
फोर्ड की किस्मत फूटी,
दल दलदल म फसा,
कीर्ति वाटर ने लूटी,
कह कैदी कविराय,
धन्य अमरीकी जनता,
सहा न भ्रष्टाचार,
उखाडी जड से सत्ता।

अमरिका का वाटरगट काण्ड लाकतत्र के माथ पर कलक का टीका है वही वह लोकतत्र के अजय परकोट पर पहरान वाली कीर्ति पताका भी है। जहा यह लोकतत्र को साग्हीन बना देने वाली उस कमजोरी का द्योतक है जिसका लाभ उठाकर भूतपूव राष्टपति निक्सन न अपनी सत्ता की बुजव दी की थी वहा वह लोकतत्र की उस आत्मशक्ति का प्रतीक है जिसम सिफ दो पत्रकारो ने सारी सत्ता को धूल चटा दी। इस अथ म यह काण्ड लोकतत्र की कमजोरी और शक्ति दोनो का प्रतीक है।

इस अथ म लाकतत्र अपराध न हाने देन की छिद्रमुक्त पद्धति भले न हो लेकिन अपराधी को बचा ल जान की ताकत चाहे अपराधी दुनिया का सबस शक्तिशाली व्यक्ति अमेरिका का राष्टपति ही क्यो न हो लोक तत्र की कमजोरी म नही है।

यह कविता होटल वाटरगट म लिखी गई है। सवप्रभुता को अपन पास सभालकर रखने के लिए अमरिकी जनता के नाम कवि की बधाई इस कविता म दज है।

नेताजी

राजनारायण को मिली,
डाक्टरेट की मूछ,
पदवी स्विटजरलैंड की,
घर में गाढ़ी पूछ,
घर में गाढ़ी पूछ,
न केवल अब नेताजी,
लोकबंधु हो गए,
न मारे कोई भाजी,
कह कैदी कविराय,
धन्य है रायबरेली,
दे दी अपनी राय,
बची है सिर्फ बरेली!

क्न्गेय म्वास्थ्यमत्री जब पन्ना वार वि"श यात्रा पर गए ता महर्षि मन्श यागी द्वारा मम्थापित त्रिश्वविद्यालय न उन्हें डाक्टर आव फिना सफा' की मानन्द उपाधि म विभूषित किया। जब स्वास्थ्यमत्री का सम्मान किया गया तब व ज्वर म पीडित थ किंतु उन्होंन अपने म्वास्थ्य की चिता नही का। मानपत्र म उन्ह 'नेताजो तथा लोकबधु क रूप म भी मबोधित किया गया। मन्नी कवि कन्नाक्ष रहा राक सके। कुण्मली लिख दी।

नेताजी

राजनारायण को मिली,
डाक्टरेट की मूछ,
पदवी स्विट्ज़रलड की,
घर म बाढी पूछ,
घर मे बाढी पूछ,
न केवल अब नेताजी,
लोकबंधु हो गए,
न मारे कोई भाजी,
वह कदी कविराय,
धन्य है रायबरेली,
दे दी अपनी राय,
बची है सिर्फ बरेली।

केंद्रीय स्वास्थ्यमंत्री जब पहली बार विदेश-यात्रा पर गए तो महर्षि महेश योगी द्वारा संस्थापित विश्वविद्यालय ने उन्हें डाक्टर आफ फिलासफी की मानद उपाधि से विभूषित किया। जब स्वास्थ्यमंत्री का सम्मान किया गया तब वे ज्वर से पीड़ित थे किंतु उन्होंने अपने स्वास्थ्य की चिंता नहीं की। मानपत्र में उन्हें नेताजी तथा लोकबंधु के रूप में भी संबोधित किया गया। क ी कवि कटाक्ष हा राक सवे। कुण्डली लिख दी।

नेताजी

राजनारायण को मिली,
डाक्टरेट की मूछ,
पदवी स्विट्ज़रलैंड की,
घर में बाढ़ी पूछ,
घर में बाढ़ी पूछ,
न केवल अब नेताजी,
लोकबंधु हो गए,
न मारे कोई भाजी,
कहं काका कविराय,
धन्य है रायबरेली,
दे दी अपनी राय,
बनी है सिर्फ बरेली!